जीवेम शरदः शतम्

मोरल फार्मास्यूटिकल्स

Caring for Healthy Life...

भूमिका

हमारी जीवन जीने की आधुनिक शैली और खान–पान, अत्यधिक व्यस्तता, भाग–दौड़ आदि के कारण हम चिंताग्रस्त और अवसादग्रसित रहने लगें हैं, नींद का अभाव, भूख की कमी, गड़बड़ पाचन, गैस, दर्द कमजोरी ,हृदय–रोग, डॉयबिटीज, त्वचाजनित रोग, पाइल्स, स्टोन, एनीमिया आदि जैसी व्याधियों से पीड़ित रहने लगे हैं. मानव शरीर एक सुव्यवस्थित और सुचारू रूप से चलने वाले यंत्र की तरह है जिसकी नियमित देखभाल अति आवश्यक है, नियमित व्यायाम, स्वास्थ्यवर्धक खान–पान और प्रसन्नचित्त रहने से शरीर भी आकर्षक, ऊर्जा से परिपूर्ण और स्वस्थ्य रहता है.

कई बार हमें छोटी–मोटी शारीरिक शिकायतें होती रहती हैं और हम चिकित्सक या केमिस्ट से मिलकर इनका निदान कराते हैं. याद रखें कि बिना चिकित्सक के सलाह के किसी भी तरह की औषधि का उपयोग नहीं करना चाहिए क्योंकि उन्हें रोगों और उनमे उपयोगी औषधियों, उनके सही डोज या खुराक और साइड–इफेक्ट्स के बारे में सही जानकारियाँ होती हैं.

आकस्मिक चोट, मोच, जलने–कटने, दर्द, गैस, कमजोरी, अपच आदि समस्याओं से निपटने के लिए हमें प्राथमिक चिकित्सा के लिए फस्ट– एड बोक्स घर में उपलब्ध रखने के साथ ही सम्बंधित दवाओं के बारे में भी जानकारी रखना अति आवश्यक है.

इस पुस्तिका में दिए गए जानकारियाँ स्वंयं की या किसी रोगग्रसित व्यक्ति के रोगों की पहचान या चिकित्सा के लिए नहीं दी गयी हैं. किसी भी तरह के रोग के निदान के लिए अपने चिकित्सक से परामर्श अवश्य करें. तो आईये, हम जान लें संक्षेप में मानव शरीर के बारे में.

मानव शरीर

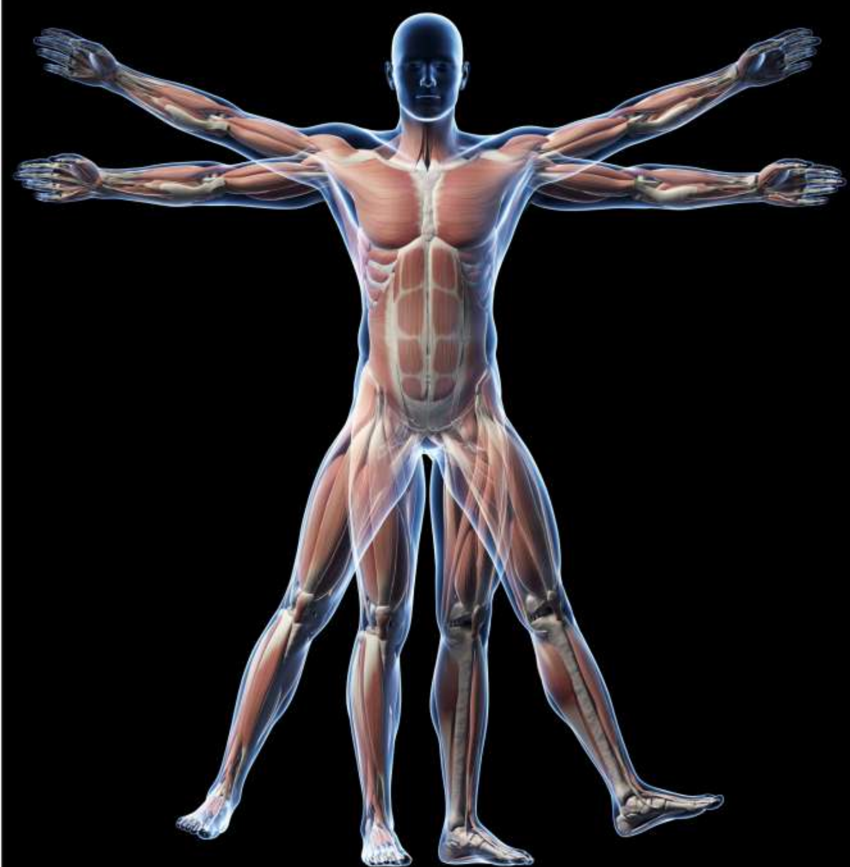

मानव एक बहुकोशीय प्राणी है.एक वयस्क शरीर अनगिनत कोशिकाओं का बना होता है. कोशिका (Cell) शरीर की एक आधारभूत रचनात्मक और क्रियात्मक सूक्ष्मतम इकाई है जिसमे जीवन की क्रियाओं को चलाने और प्रतिकृति प्रजनन (Reproduction) जैसे महत्वपूर्ण क्रिया की अद्भुत क्षमता निहित होती है.

कोशिका

प्रत्येक कोशिका तीन भागों का बना होता है :

1.कोशिका आवरण या कोशिका की झिल्ली (Cell membrane)- कोशिका के बाहर और भीतर के पदार्थों के बीच एक 'बेरिअर' का काम करता है. कोशिका के अन्दर जाने वाली और बाहर आने वाली चीजों को नियंत्रित करता है और कोशिका के विद्युतीय पोटेंशिअल को बनाये रखता है.

2.नाभीकि (Nucleus) – नाभीकि ही कोशिका का नियन्त्रण केंद्र (Controlling centre) है.

3.सायटोप्लाज्म – कोशिका की झिल्ली और नुक्लियस के मध्य में विद्यमान जेल (Gel) के समान पदार्थ को सायटोप्लाज्म कहा जाता है. इसमें मायटोकॉण्ड्रिआ, गोल्गी, लायसोसोम्स जैसे कई सूक्ष्म संरचनाएँ होते हैं जो एक या एक से अधिक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य संपादित करते रहते हैं.

ऊतक

एक ही प्रकार की, समान गुणों वाली और एक ही तरह की कार्य करने वाली कोशिकाओं के समूह को ऊतक (Tissue) कहते हैं. शरीर में मुख्यतः 4 प्रकार के ऊतक होते हैं : ईपीथीलिअल, कनेक्टिव, मसल और नर्वस ऊतक .

अंग या आर्गन

ऊतकों के वे समूह जो किसी विशेष प्रकार के या कई प्रकार के कार्यों को संपादित करते हैं , को अंग या आर्गन (Organ) कहते हैं जैसे यकृत (Liver), व्रिक्क (Kidney), आमाशय (Stomach), ह्रदय (Heart), फेफड़े (Lungs), गर्भाशय (Uterus) आदि.

तन्त्र

अंगों के वे समूह जो एक साथ सम्मिलित होकर किसी विशेष प्रकार के या कई प्रकार के कार्यों को संपादित करते हैं , को तन्त्र (Organ system) कहते हैं जैसे पाचन तन्त्र (Digestive System), रक्त संचार तन्त्र (Blood Circulatory System) , श्वसन तन्त्र (Respiratory System) , प्रजनन तन्त्र (Reproductive System) आदि.

इस प्रकार कोशिकाओं के समूह को ऊतक , ऊतकों के समूह को आर्गेन और अंगों या आर्गेंस के समूह को तन्त्र कहते हैं.

इन अंग तंत्रों (organ systems) के बारे में हम संक्षिप्त में जान लेः-

कंकाल तन्त्र

Skeletal System

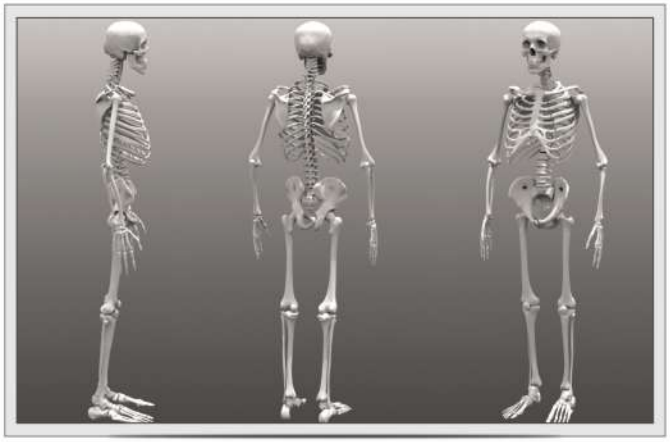

जन्म के समय मानव शरीर 270 अस्थियों (Bones) का बना होता है किन्तु वयस्कावस्था में कुछ हड्डियों के जुड़ जाने के कारण इनकी संख्या 206 रह जाती है। मानव कंकाल, मानव शरीर का आन्तरिक ढांचा है जो हड्डियों और कार्टिलेज का बना होता है। कंकाल की सहायता से यह पता चल जाता है कि यह स्त्री की है, पुरुष की या पशु की है।

मानव-कंकाल निम्न 6 प्रकार के कार्य सम्पादित करता है :

1. शरीर को दृढ़ता प्रदान कर सहारा देना।
2. शरीर को संरक्षित रखना।
3. मांसपेशियों को संलग्न और शरीर को गति प्रदान करना।
4. अंतःस्रावों का विनियमन (Regulate) करना।
5. रक्त–कोशिकाओं का निर्माण
6. लंबी नली के आकार की अस्थियों में मज्जा (Bone marrow) होती है, जो रक्त–कण का निर्माण करती है। कंकाल हमारे शरीर के कई महत्वपूर्ण आंतरिक अंगों जैसे मस्तिष्क, मध्य एवं भीतरी कान, दोनों आँखें, रीढ़ की हड्डी (Spinal cord), फेफडो, हृदय एवं महत्वपूर्ण रक्त–वाहिनियों की भी रक्षा करता है।

तंत्रिका तंत्र

Nervous System

इस तंत्र के द्वारा हमारा मस्तिष्क संकेत भेजता या ग्रहण करता है कि हमारे शरीर में या इसके इर्द–गिर्द क्या हो रहा है, तंत्रिका तंत्र या Nervous System कई अरब तंत्रिका कोशिकाओं का बना होता है। इन तंत्रिका कोशिकाओं को Nerve cells कहते हैं। Nerve cells या Neurons आपस में मिलकर तंत्रिका तंत्र (Nervous System) का निर्माण करती है- Nerve एक तार (Wire) की तरह है जो शरीर में आवेग–संवेग (Impulse) प्रेषित करती रहती है।

तंत्रिका कोशिकाओं या Nerve cells रासायनिक और विद्युत दोनों के मेल से कार्य करती है। तंत्रिका तंत्र (Nervous System) किसी मैसेज को 100 मीटर/सेकेण्ड की गति से भेजने में सक्षम है।

Nervous

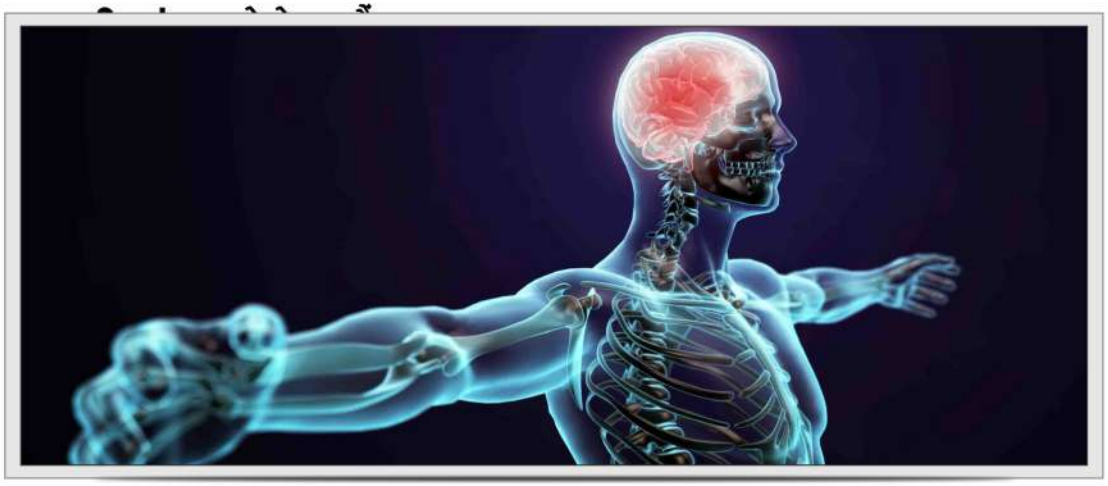

केंद्रीय तंत्रिका तंत्र (Central Nervous System)

स्वतंत्र तंत्रिका तंत्र (Peripheral Nervous System)

पाचन तन्त्र

Digestive System

पाचन तंत्र में जो अंग सम्मिलित हैं, वे हैं, ओष्ठ (Lips), दाँत (Teeth), जीभ (Tongue), कंठ, अन्ननलिका, (Oesophagus), आमाशय (Stomach), पक्वाशय (Duodenum), छोटी आंत (Small Intestine), बड़ी आंत (Large Intestine), मलाशय (Rectum), यकृत (Liver), अग्न्याशय (pancreas) तथा लार ग्रंथियाँ (Salivary glands)।

ये अंग भोजन के पाचन (Digestion), अवशोषण (Absorption), चयापचय (Metabolism) से संबंधित हैं।

भोजन का पाचन, अवशोषण, मल त्याग आदि क्रियाएँ पाचन तन्त्र के द्वारा सम्पन्न होती हैं। आहार नलिका (Food Pipe or Alimentary canal) तथा उससे सम्बन्धित पाचन ग्रन्थियाँ (Digestive glands) सम्मिलित रूप से पाचन तन्त्र बनाती हैं। आहार नलिका 8 से 10 मीटर लम्बी होती है जो मुख से मल द्वार तक फैली रहती हैं।

आहारनलिका में भोजन के अघुलनशील एवं जटिल अवयव (कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन एवं वसा) एन्जाइम्स के द्वारा घुलनशील एवं सरल अवयवों (ग्लूकोज़, अमीनों एसिड, फैटी एसिड) में परिवर्तित हो जाते हैं। इस प्रक्रिया को भोजन का पाचन कहते हैं। इसमें यान्त्रिक एवं रासायनिक दोनों ही प्रकार की क्रियाएँ होती हैं। भोजन का अवशोषण छोटी आंत (Small Intestine) में होता है। आहार का वह भाग, जो पाचन और अवशोषण के पश्चात आंत में बच जाता है, को मल कहते है। मल में जीवाणुओं (Bacteria) की बहुत बड़ी संख्या होती है जो बड़ी आंत से ही आते है। मल में नाइट्रोजन की बहुत मात्रा होती है जिससे उसकी उत्तम खाद बनती है।

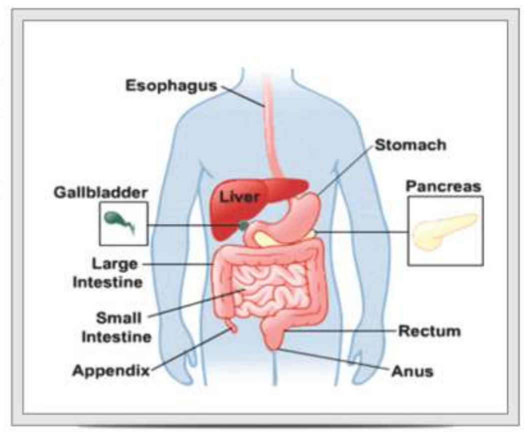

रक्त संचालन तन्त्र

Circulatory System

रक्त संचालन तन्त्र (circulatory system) की सहायता से शरीर की कोशिकाओं के बीच पोषक तत्वों का संचरण होता है, रोगों से शरीर की रक्षा होती है तथा शरीर का ताप और pH स्थिर बना रहता है।

धमनियां (Arteries) हृदय से शुद्ध रक्त (Pure Blood) ले जानेवाली लचीली नलियाँ हैं, जिनके द्वारा रक्त (Blood) अंगों में पहुँचता है। शरीर में धमनियों का जाल होता है तथा इनमें शाखाएँ एवं प्रशाखाएँ एक दूसरे से मिल जाती हैं, जिससे एक के कटने पर दूसरों से अंग को रक्त पहुँचाया जाता है। फेफड़े (Lungs) और वृक्क (Kidney) में जाने वाली धमनियां अशुद्ध रक्त ले जाती है और वहां से शुद्ध किया गया रक्त शिराओं (Veins) से हृदय में वापस लाती है। रक्त में प्लाज्मा, लाल रक्त कोशिकायें, श्वेत रक्त कोशिकायें, प्लेटलेट्स आदि रहती है। मानव के एक घन मि.मी. रक्त में 50,00,000 लाल रक्त कोशिकायें तथा 6,000 से 9,000 तक श्वेत रक्त कोशिकायें रहती हैं। शरीर के अन्दर रक्त नहीं जमता, पर शरीर से बाहर निकलते ही यह जमने लगता है।

प्रमुख कार्य :

1. फेफड़ों की वायु कूपिकाओं (Air sacks) से आक्सीजन को ग्रहण करके शरीर की प्रत्येक कोशिका तक पहुँचाना।
2. कोशिकीय श्वसन (Cellular respiration) में उत्पन्न CO_2 को फेफड़ों तक परिवहन का कार्य।
3. ऊतकों व कोशिकाओं (Cells और Tissues) में चयापचय (Metabolism) के फलस्वरूप बने उत्सर्जी पदार्थों को वृक्कों (Kidney) तक पहुंचाना।
4. हार्मोन्स को शरीर के विभिन्न भागों तक पहुँचाना।
5. पचें हुए खाद्य पदार्थों को शरीर की विभिन्न कोशिकाओं तक पहुचाना।
6. शरीर के तापमान को स्थिर बनाए रखना।
7. शरीर में प्रवेश करने वाले रोगाणुओं से शरीर की रक्षा करना।

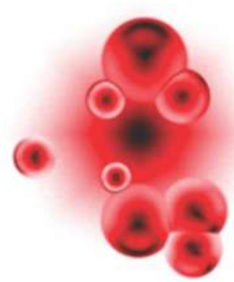

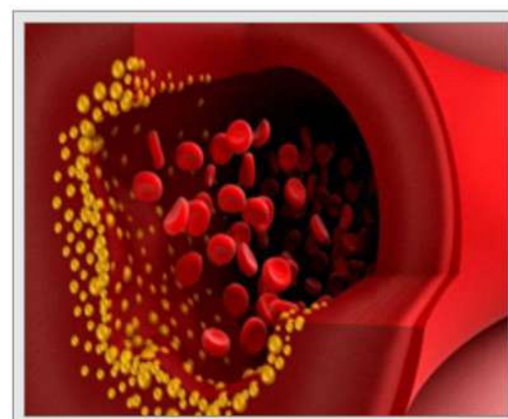

श्वसन तन्त्र

Respiratory System

इस तंत्र में श्वाँस लेने और छोडने की क्रिया में काम करने वाले समस्त अंगों की क्रिया का वर्णन आता है। ये अंग हैं – नाक (Nose), कंठ (Throat), स्वरयंत्र (Larynx), श्वासनली (Pharynx), श्वसनिका (Trachea), फेफड़े (Lungs) तथा कई पेशियाँ (Muscles)।

इस तंत्र द्वारा रक्त का शुद्धिकरण होता है। मनुष्य एक मिनट में 16–20 बार श्वास लेता है। व्यायाम और क्रोधावस्था में श्वास–गति बहुत तेज हो जाती है किन्तु सोते समय या आराम करते समय श्वास–गति कम हो जाती है। कई रोगों में जैसे दमा, क्षयरोग, मलेरिया, पीलिया, दिल और गुर्दों के रोगों में भी श्वास–गति बढ़ जाती है।

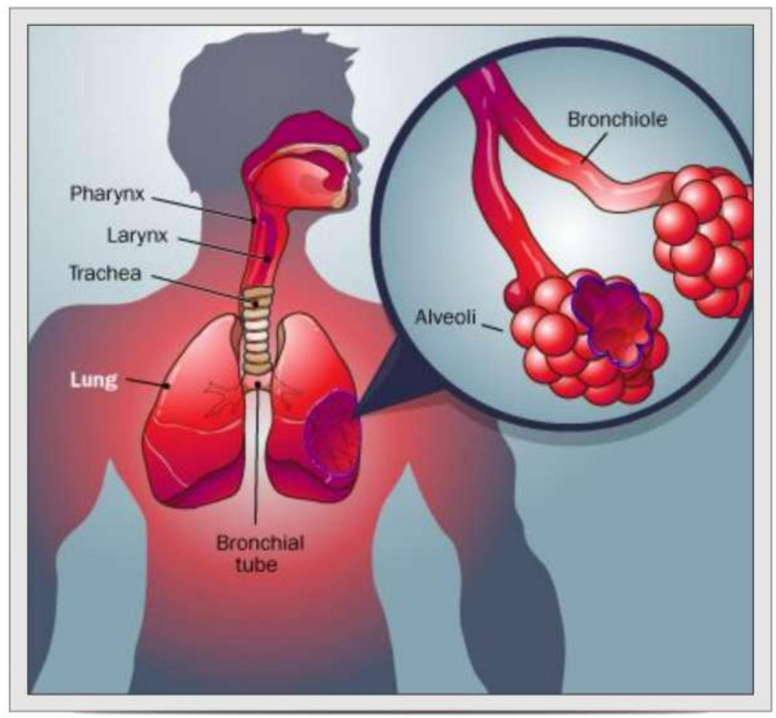

जनन तन्त्र

Reproductive System

स्त्रियों का जनन तन्त्र बाहरी व आन्तरिक दो हिस्सों में बंटा होता है। बाहरी हिस्से में मूत्राशय और योनि (Vagina) होती है। आन्तरिक हिस्से में गर्भाशय (Uterus), अण्डाशय (Ovary) व ग्रीवा (Cervix) होती है। मूत्राशय बाहर दिखाई देने वाला अंश है जबकि योनि एक मांसल नली है, जो गर्भाशय व ग्रीवा को शरीर के बाहरी भाग से जोड़ती है। योनि से ही मासिक धर्म का स्राव बाहर आता है।

आंतरिक हिस्से में गर्भाशय आता है, जो पेट के निचले भाग में स्थित खोखला मांसल भाग है। गर्भाशय का मुख्य कार्य जन्म से पूर्व अन्दर विकसित होते बच्चे का पोषण करना है। गर्भाशय का निचला किनारा ग्रीवा (Cervix) है और यह योनि से ऊपर स्थित होता है। इसकी लंबाई करीब एक ईंच होती है। ग्रीवा से ही मासिक का रक्त योनि तक पहुंचता है। जन्म के समय बच्चे के बाहर आने का मार्ग भी यही ग्रीवा है। संभोग के बाद वीर्य योनि से ग्रीवा (Cervix) और फेलोपियन टयूब के रास्ते ही अण्डाशय तक पहुंचता है। अण्डाशय में अण्डा उत्पन्न होता है। यह गर्भाशय की नली के अन्त में स्थित होता है।

माहवारी या मासिक धर्म (**Menstural Cycle** or MC)

किशोरवय की लडकी या युवा स्त्री का अंडाशय (Ovary) प्रत्येक महीने में एक डिम्ब या अंडा जो विकसित हो चुका होता है, बनाता हैं। यह अंडा फेलोपियन टयूब के द्वारा गर्भाशय में पहुचता है. गर्भाशय के दीवार का स्तर रक्त और द्रव्य पदार्थ से गाढा हो जाता है ताकि अगर अंडा औए शुक्राणु (Sperm) मिलकर निषेचित (Fertilized) हो जाय तो वह भ्रूण बनकर गर्भाशय के दीवार के स्तर में शिशु के रूप में विकसित हो सके। यदि उस अंडा का शुक्राणु से मिलकर निषेचित नहीं हो सके तो वह स्त्राव बन कर रक्त के साथ योनिमार्ग से बाहर आ जाता है . इसी स्त्राव को मासिक धर्म या माहवारी कहते हैं।

सामान्य तौर पर मासिक का रक्तस्त्राव 28 से 32 दिनों में एक बार होता है, और इसका समय 3 से 5 दिन तक रहता है, कभी–कभी 7 दिन तक का भी हो सकता है। इस अवधि को पीरिअड कहते हैं। मासिक चक्र हार्मोन से नियंत्रित होता रहता है। माहवारी चक्र के किसी भी समय गर्भ होने की सम्भावना हो सकती है।

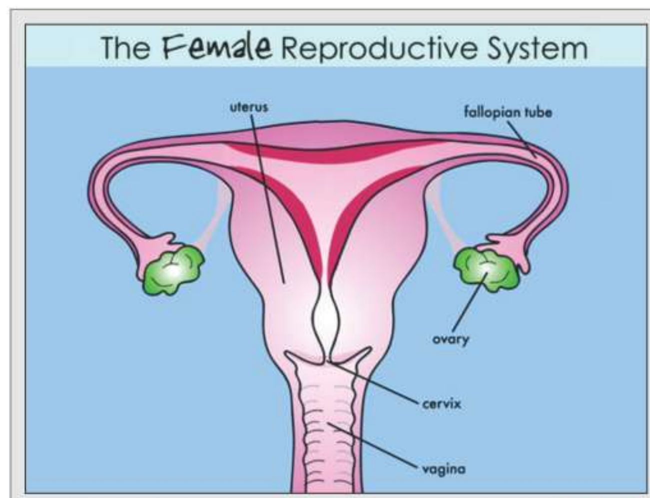

पुरूष जनन तन्त्र

पुरूष जनन तन्त्र भी बाहरी व भीतरी हिस्से में बंटा है। बाहरी हिस्से में लिंग व अण्डकोष (Scrotum) होता है। भीतरी हिस्से में अण्डग्रन्थि, शुक्रवाहिका, प्रोस्टेट, एपिडिडाइमस एवं शुक्राशय होता है। लिंग मांसल हिस्सा है, जो आम तौर पर छोटी अवस्था में रहता है, लेकिन उत्तेजना होने पर यह कड़ा और खड़ा होकर लंबा व मोटा हो जाता है। यह लचीले टिशू व रक्त वाहिकाओं से बना है। लिंग के निचले हिस्से में थैली की तरह अण्डकोष लटका होता है। इस थैली में दो अण्डग्रन्थि (Testes) होती है। लिंग इससे जुड़ा होता है।

प्रोस्टेट पुरूषों की यौनग्रन्थि होती है। यह एक अखरोट के आकार का होता है, जो ब्लैडर व यूरेथ्रा के गले को घेरे रहता है। यूरेथ्रा वह नली है जो ब्लैडर से मूत्र ले जाती है। प्रोस्टेट ग्रन्थि से हल्का खारा तरल पदार्थ स्रावित होता है। इस तरल पदार्थ में वीर्य व शुक्राणु दोनों रहता है। योनि में रफ्तार से हुए वीर्य स्राव से शुक्राणु भी बेहद गतिशील होता है, जिससे अंडाणु के निषेचन की प्रक्रिया भी बेहद तेज होती है।

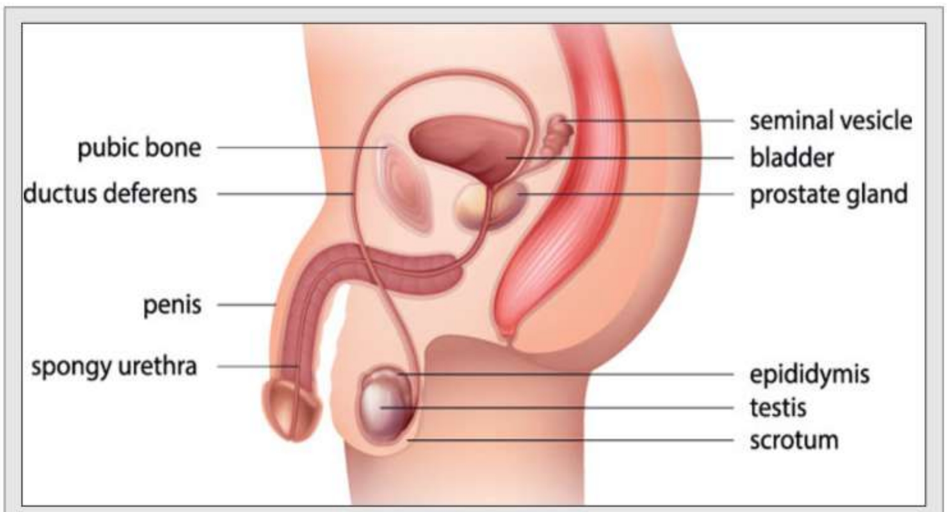

मूत्र तन्त्र

Urinary System

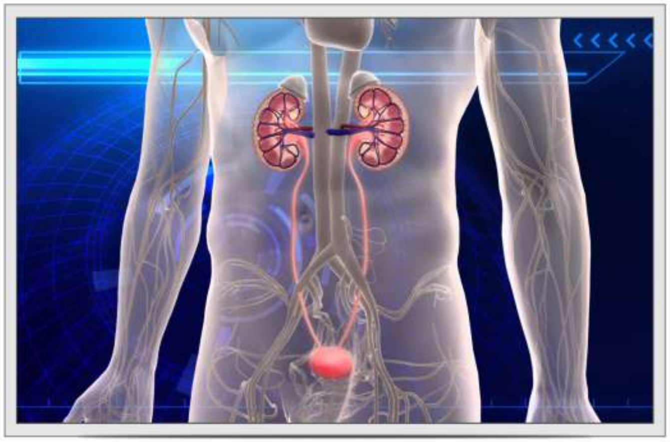

वृक्क (Kidney), मूत्रनली (Ureter), मूत्र–थैली (Urinary Bladder), प्रॉस्टेट ग्रंथि (Prostate Gland) तथा इनकी रुधिर वाहिनियाँ (Blood vessels) आदि इस तंत्र के अंतर्गत हैं। किडनी रक्त से बेकार और हानिकारक पदार्थों को छान कर बाहर कर देता है और मूत्र बनाता है। अगर किडनी ऐसा न करे तो शरीर में हानिकारक और विषाक्त चीजों के बनने और जमा हो जाने के कारण बीमारियाँ हो जायंगी. स्वस्थ्य रहने के लिए कम से कम एक भी किडनी का शरीर में होना आवश्यक है।

दो पतली मूत्र नलियों (Ureter) के द्वारा मूत्र या पेशाब किडनी से श्रोणि गुहा (Urinary Bladder) में जाकर जमा हो जाती है। पुरुषों में मूत्र नली (Ureter) की लंबाई 7 इंच तथा स्त्रियों में मूत्र नली की लंबाई 1 इंच होती हैं।

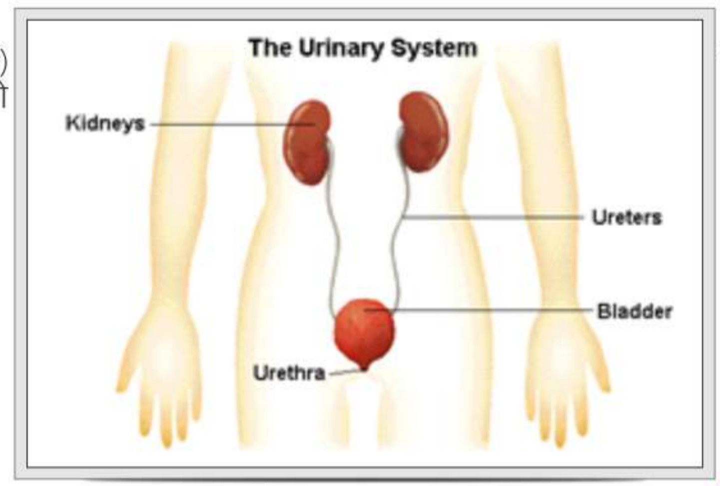

अन्तःस्त्राव ग्रन्थियाँ

Inter Secretion Gland

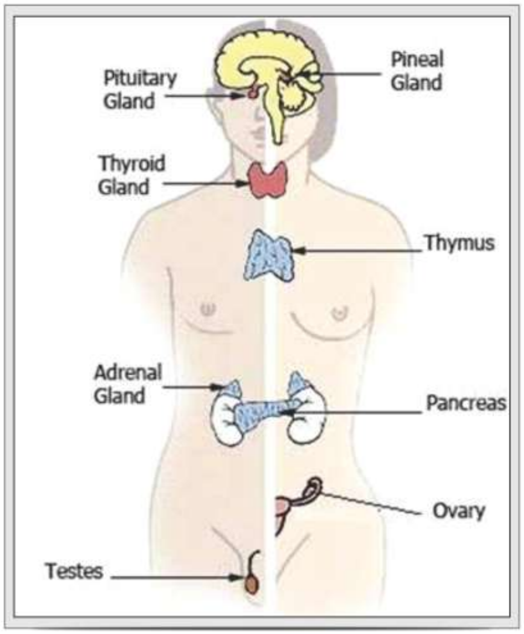

हार्मोन्स एक समूह की कोशिकाओं से दुसरे समूह की कोशिकाओं को सूचना और सन्देश सौंपता (Transfer) है। हार्मोन्स शरीर में, रक्त संचालन के द्वारा गतिशील रहते हैं परन्तु प्रत्येक हार्मोन किसी विशेष कोशिकाओं को ही प्रभावित करता है।

ग्रंथि (Gland) रसायन की उत्पत्ति और स्त्राव करता है. प्रत्येक ग्लैंड किसी विशेष क्षेत्र में ही इस स्त्राव को छोड़ता (Release) है जैसे कि स्वेद और लार ग्रन्थि (Sweat and Salivary gland) अपने स्त्राव को क्रमशः त्वचा या मूंह के भीतर छोड़ता है . अन्थस्त्राव ग्रंथियाँ (Endocrine Glands) 20 से भी ज्यादा हारमोंस सीधे रक्त में छोड़ती हैं। प्रमुख ग्रंथियाँ हैं :–हायपोथैलेमस, पिट्यूट्री, थाइरायड, पारा थाइरायड, एड्रेनल, पेन्क्रीआज, ओवरी और टेस्टिस।

ज्ञानेन्द्रिय

Sensory Organs

आँखें , नाक, कान, जीभ और त्वचा क्रमशः देखने, सूंघने, सुनने, स्वाद चखने और स्पर्श महसूस करने के लिए हैं.

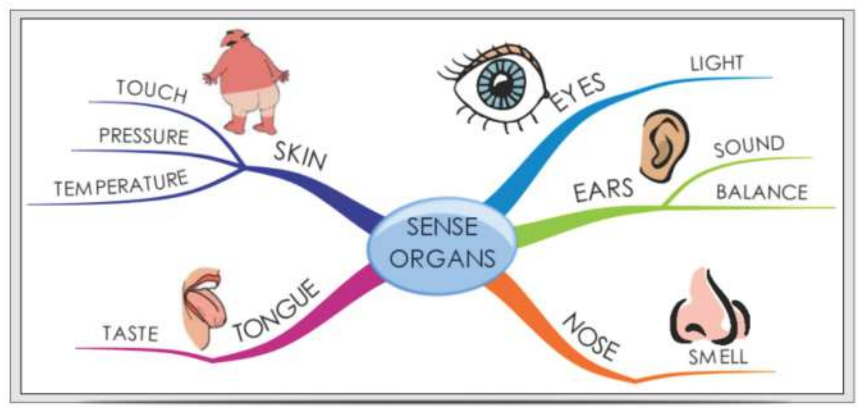

बैक्टीरिया
Bacteria

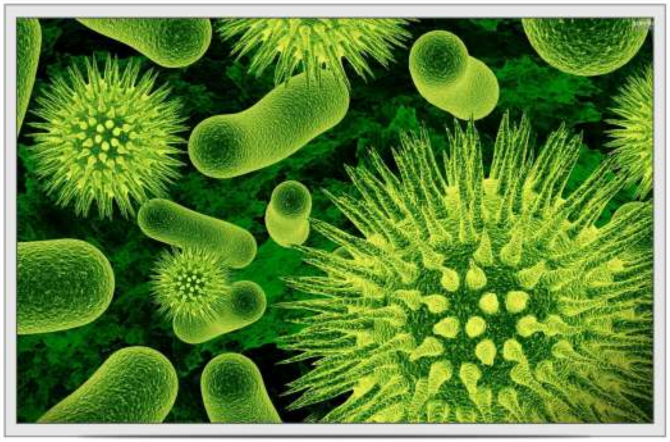

जीवाणु अत्यंत सूक्ष्म होते हैं और इन्हें केवल एलेक्ट्रोंन माइक्रोस्कोप की सहायता से ही देखा जा सकता है. जीवाणु कई प्रकार के होते है जैसे बैक्टीरिया, फफूंदी (फंगाई), वाइरस, प्रोटोजोआ, हेलमिन्थ्स (वर्म).

बैक्टीरिया एक एककोशिकीय जीव है. इनकी आकृति गोलाकार से लेकर छड़, आदि आकार की हो सकती है। ये सूक्ष्मजीव पृथ्वी पर लगभग हर जगह पाए जाते हैं। ये हवा, पानी, पृथ्वी और हमारे–आपके शरीर में भी मौजूद होते हैं. शौचालय में, आफिस के टेबल पर, पर्स में मौजूद नोटों पर, पेट के निचले हिस्से में, मोबाइल फोन पर बहुत ज्यादा संख्या में कई प्रकार के बैक्टीरिया पाए जाते हैं। हमारे शरीर की गंध पसीने के कारण नहीं बल्कि बैक्टीरिया के कारण होती है। वारिश होने पर, हवा में एक अजीब सी गंध होती है. यह एकटीनोमाईसीट्स नामक बैक्टीरिया के कारण होती है.

लेकिन सभी बैक्टीरिया सेहत के लिए हानिकारक नहीं होते। कुछ बैक्टीरिया बेहद मददगार भी होते हैं। पाचन और पोषण में लाभदायक लैक्टोबेसिलस श्रेणी के बैक्टीरिया जिन्हें प्रो–बायोटिक्स कहते हैं, पेट के लिए वरदान हैं। इनके बिना पाचन और पाचन तंत्र अधूरा रहता है। लंबे समय तक एंटीबायोटिक दवा देने के बाद डॉक्टर रोगी को प्रो–बायोटिक लेने की सलाह देते हैं। बुढ़ापे की सबसे प्रमुख वजह है–मुक्त कण, जो तमाम मेटाबॉलिक प्रक्रियाओं, हानिकारक तत्वों और दिनचर्या की वजह से पैदा होते हैं। नाक और साइनस से संबंधित एलर्जी में प्रो–बायटिक्स बेहद कारगर होते हैं। यदि गर्भवती महिलाओं को प्रो–बायोटिक्स से भरपूर खुराक मिले तो दूध की मात्रा और गुणवत्ता दोनों बढ़ सकती है।

स्त्रियों की योनि में भी लाभदायक बैक्टीरिया का होना योनि के स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक है। लेक्टोबेसिलस बैक्टीरिया की कई प्रजातियाँ हाईड्रोजन पैराक्साइड़ और अन्य रसायन की उत्पत्ति करते हैं जिनके कारण ईस्ट और अनचाहे जीवाणुओं की वृद्धि नहीं हो पाती है। ये योनि के pH और योनि के अंदर की अम्लीयता बनाये रखने में मदद करते हैं। योनि में लेक्टोबेसिलस बैक्टीरिया की कमी होने पर बैक्टीरियल वेजायनोसिस (Bacterial vaginosis) होने की सम्भावना बढ़ जाती है और HIV या यौन–रोग का संक्रमण भी हो सकता है.

एंटीबायोटिक्स के निरंतर प्रयोग होने के कारण बैक्टीरिया में प्रतिरोधक क्षमता विकसित हो रही है। अस्पताल में पाए जाने वाले रोगाणु घातक हो सकते हैं। बीमारी को फैलाने वाले बैक्टीरिया पर दवाएं असर नहीं करती। बैक्टीरिया एंटीबायोटिक–प्रतिरोधी हो गए हैं और होते जा रहे हैं, बैक्टीरिया की प्रतिरोधक क्षमता खत्म करने के लिए एंटीबायोटिक और सलवैक्टेम, टेजोवैक्टेम या क्लेवुलेनिक एसिड के सम्मिश्रण का प्रयोग किया जाता है, ताकि एंटीबायोटिक बैक्टीरिया को खत्म कर सके या उनकी वृद्धि को रोक सकें।

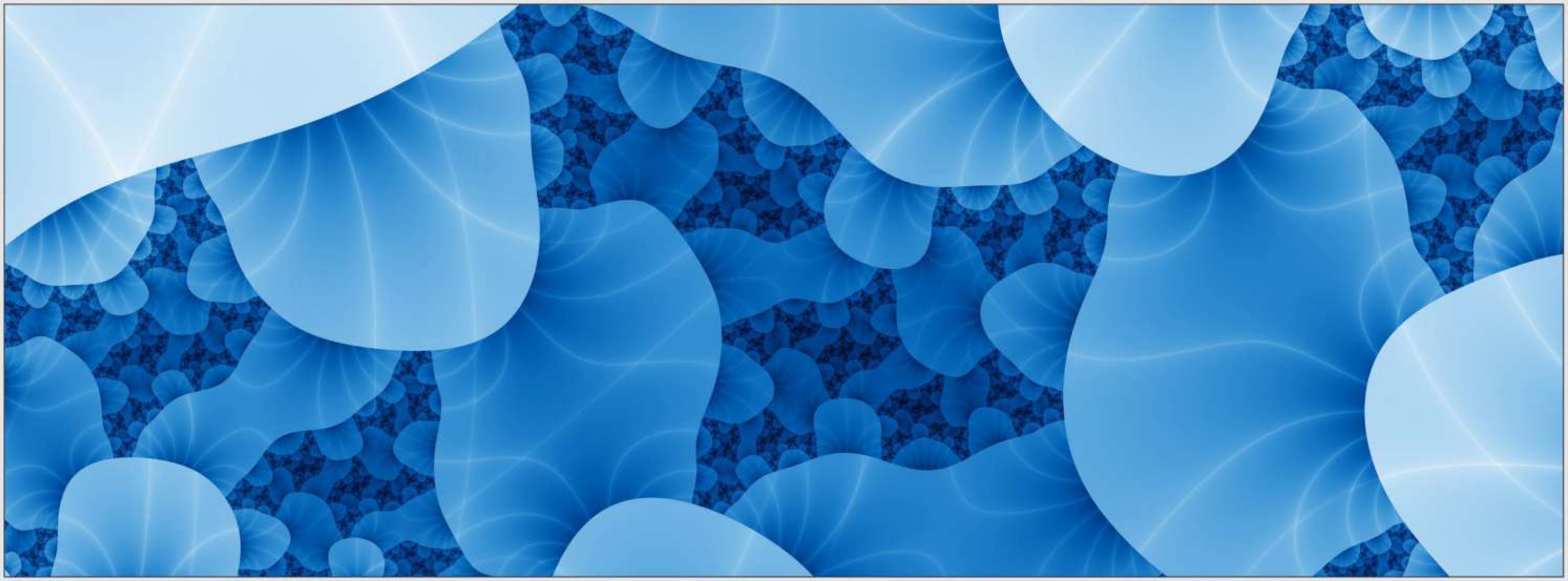

बैक्टीरिया द्वारा शरीर के कुछ विभिन्न अंगों में संक्रमण के नाम निम्न प्रकार से हैं

- पेट और आंत में संक्रमण – Gastro-Intestinal Infections (G.I.Infections)
- श्वसन तन्त्र में संक्रमण –RespiratoryTract Infections (R.T.I.)
- मूत्र तन्त्र में संक्रमण – UrinaryTract Infections (U.T.I.)
- चर्म और नर्म टिस्सू में संक्रमण – Skin and Soft Tissue Infections (S.S.T.I.)
- स्त्री–रोग संबंधी संक्रमण – Gynaecological Infections e.g. PID (Pelvic Inflammatory Diseases)
- दांत में संक्रमण –Dental Infections

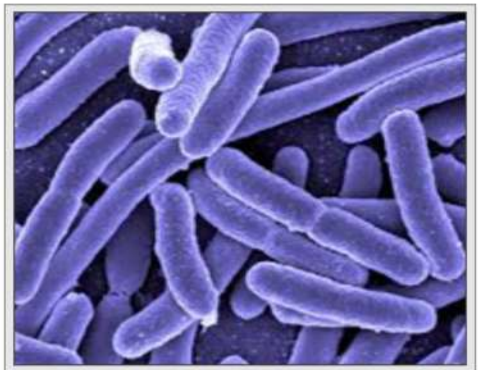

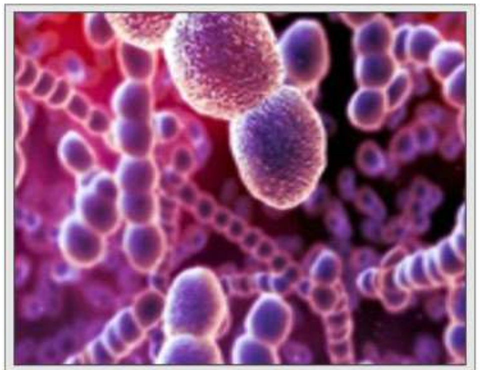

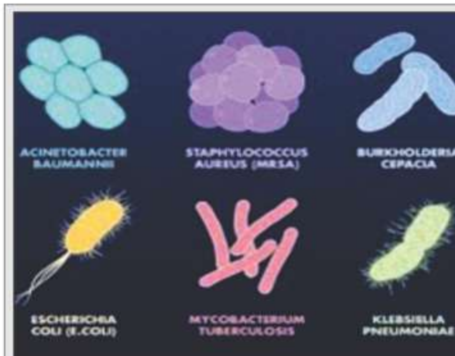

प्रोटोजोआ
Protozoa

अमीबा एककोशीय जीव है जिसकी अधिकांश जातियाँ नदियों, तालाबों, मीठे पानी की झीलों, पोखरों, पानी के गड्ढों आदि में पाई जाती हैं। कुछ संबंधित जातियाँ महत्त्वपूर्ण परजीवी और रोगकारी हैं।

जिआरडिया भी एक अति सूक्ष्म एक–कोशीय जीव है.

अमीबा के संक्रमण से होने वाले रोग

यह रोग गंदे पानी पीने से, गंदी जगहों पर भोजन करने से, संक्रमित खाना खाने से, शौच के बाद ठीक से हाथ साफ नहीं करने से होता है.

अमीबिक डीसेन्ट्री–डायरिया (पेट से पानी की तरह गंदे गंध वाली मल) निकलना, शरीर में पानी का अभाव हो जाना, कभी–कभी मल में रक्त का आना या मल के साथ आंव का आना, पेट में दर्द आदि शिकायतें हो सकती हैं.

अमीबिक लिवर अब्सेस–अगर अमीबिक डीसेन्ट्री का इलाज नहीं किया जाय तो अमीबा लिवर में पहुंच कर लिवर को संक्रमित कर वहां घाव बना देता है.

जिआरडिया के संक्रमण से होने वाले रोग

जिआरडिएसिस–जिआरडिया के कारण भी डायरिया हो सकती है. संक्रमित खाना खाने से, शौच के बाद ठीक से हाथ साफ नहीं करने से , गंदे जल पीने से इसका संक्रमण होता है. जिआरडिया छोटी आंत को संक्रमित करता है. इसके संक्रमण से डायरिया, पेट में मरोड़, गैस ,मिचली आदि की भी शिकायत सकती है।

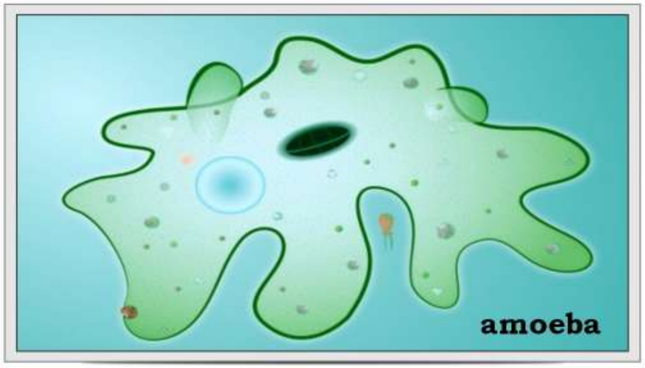

रक्ताल्पता

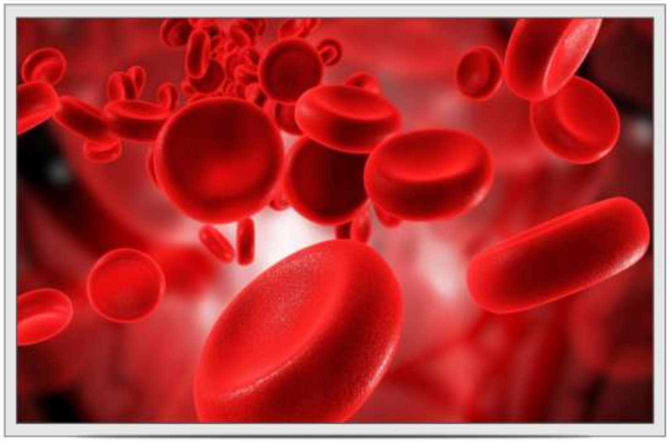

खून में आयरन की कमी से हीमोग्लोबिन की कमी हो जाने को एनीमिया अर्थात रक्ताल्पता का रोग कहा जाता है। आयरन हमारे शरीर में लाल रक्त कोशिकाओं का निर्माण करता है। ये कोशिकाएं ही शरीर में हीमोग्लोबिन बनाने का काम करती हैं। इसलिए आयरन की कमी से शरीर में हीमोग्लोबिन की कमी हो जाती है और हीमोग्लोबिन कम होने से शरीर में ऑक्सीजन की कमी होने लगती है क्योंकि हीमोग्लोबिन ही फेफड़ों से ऑक्सीजन लेकर रक्त में ऑक्सीजन पहुंचाता है ।बढ़ते बच्चों, स्तनपान कराने वाली महिलाओं व बीमार व्यक्तियों में एनीमिया का खतरा ज्यादा होता है। हमारे देश की लगभग 90 प्रतिशत महिलाएं एनीमिया से पीड़ित हैं।

आयरन की कमी के कारण होने वाली एनीमिया को IDA (Iron Deficiency Anemia) **कहते है।** स्वस्थ वयस्क पुरूष के शरीर में 13–16 व महिला में 12–14 ग्राम प्रति डेसिलीटर हीमोग्लोबिन होना चाहिए। कुछ और भी कारण हैं जिनके कारण एनीमिया हो सकती है जैसे–कुपोषण, किडनी में कैंसर, थैलेसिमियां, असामान्य हीमोग्लोबिन, विटामिन बी.12 की कमी, केमोथेरेपी, असामान्य लाल रक्त–कण, अत्यधिक माहवारी रक्त स्त्राव, थायरायड की समस्या, लिवर की बिमारी, एड्स ,टी.बी., किडनी का फेल हो जाना इत्यादि. एनीमिया के रोगी को लौह तत्व, विटामिन बी, फोलिक एसिड की कमी हो जाती है।

एनीमिया के लक्षण:

कमजोरी, थकावट, चक्कर आना, सांस फूलना, सिर–दर्द रहना, त्वचा का पीला हो जाना, हृदय की धडकन का तेज होना, आँख या नाखून में पीलापन, हाथ–पैरों में ठढापन आदि.

आयरन की कमी के कारण होने वाली एनीमिया (IDA) का उपचार

आयरन की कमी के कारण होने वाली एनीमिया (IDA) को दूर करने के लिए अच्छी गुणवत्ता वाली आयरन–टोनिक लेने के साथ ही अपने आहार पर खास ध्यान देना चाहिए जैसे गेहूं, चना, मोठ, मूंग को अंकुरित कर नींबू मिलाकर सुबह नाश्ते में लेना चाहिए. चुकंदर, हरी पत्तियों वाली सब्जी, मेथी, खजूर, बादाम, आलू, खजूर तरबूज, सेब, अंगूर, किशमिश, केला, फालसा और अनार में भी आयरन की प्रचुर मात्रा होती है.

आयरन की कमी से होने वाली एनीमिया (IDA) के उपचार के लिए मोरल फार्मास्युटिकल्स का उत्पाद है, **'मोरोफर गोल्ड'**

Vitamins

विटामिन्स
Vitamins

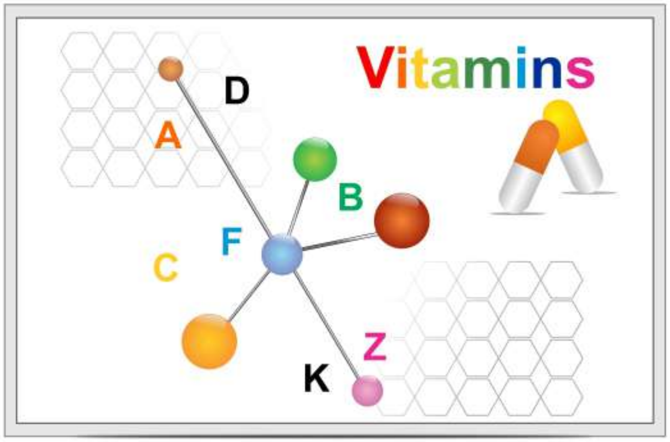

स्वस्थ रहने के लिए हम हमेशा संतुलित और पौष्टिक आहार अपनाने की कोशिश करते हैं, परन्तु फिर भी कई बार हमारे खान–पान में कोई न कोई ऐसी कमी रह ही जाती है, जिससे सेहत संबंधी कई समस्याएं हमें परेशान करने लगती हैं। शरीर को सुचारु रूप से चलाने में विटामिन्स और माइक्रोन्यूट्रीएंट्स बहुत जरूरी होते हैं,

तरह–तरह के पोषक तत्व मिल कर हमारी सेहत को दुरुस्त रखते हैं, जिनमें विटामिन्स की भी खास भूमिका होती है। विटामिन (Vitamin) जटिल कार्बनिक पदार्थ होते हैं तथा शरीर की उपापचयी क्रियाओं में भाग लेते हैं। ये कार्बन, हाइड्रोजन, ऑक्सीजन, नाइट्रोजन तथा गन्धक आदि तत्वों से बने सक्रिय एवं जटिल कार्बनिक यौगिक हैं। ये अल्प मात्रा में हमारे शरीर को स्वस्थ एवं निरोग रखने के लिए आवश्यक होते हैं। इनकी कमी से अनेक रोग हो जाते हैं। इन्हें दो वर्गों में विभक्त किया जाता है–

- जल में घुलनशील विटामिन, जैसे– विटामिन 'B', 'C', 'A'
- वसा में घुलनशील विटामिन, जैसे– विटामिन 'A', 'D', 'K' आदि

पानी में घुलनशील विटामिन्स शरीर में संग्रहित नहीं होते हैं और उन्हें हमें रोज आहार के माध्यम से लेना पड़ता है।

विटामिन ए – आँखों में किसी समस्या को होने से रोकता है, प्रतिरोधक क्षमता बढाता है, कोशिकाओं की वृद्धि और विकास के लिए महत्वपूर्ण है और त्वचा को स्वस्थ्य रखता है.

विटामिन डी – यह शरीर के द्वारा कैल्शियम के अवशोषण के लिए महत्वपूर्ण है और हड्डियों को मजबूत बनाता है.

विटामिन ई– यह एक उत्तम एन्टीआक्सीडेंट है. कोशिकाओं की मुक्त कणों से रक्षा करता है और लाल रक्त कणों को स्वस्थ्य रखता है. विटामिन 'E' की कमी से प्रजनन शक्ति कम हो जाती है.

विटामिन सी– यह एक एंटीआक्सीडेंट विटामिन है जो शरीर के टिशूज (कोशिकाओं) की वृद्धि और मरम्मत के लिए, लिवर द्वारा हानिकारक चीजों को नश्ट करने की प्रक्रिआओं के लिए, रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए, कार्टिलेज, हड्डियों और दांतों की मजबूती और मरम्मत के लिए, बढ़ती उम्र के साथ त्वचा के ढीलेपन और उस पर आने वाली झुर्रियों को घटाने के लिए आवश्यक है.

विटामिन्स 'बी'

Vitamin - 'B'

थायमिन (विटामिन - बी1)- यह शरीर में कार्बोहाइड्रेट्स को ऊर्जा में परिवर्तित करता है और हृदय, मांसपेशियों और नर्वस सिस्टम (तंत्रिका तंत्र) के कार्य के लिए आवश्यक है। इसकी कमी से अवसाद, कमजोरी, थकान, चिड़चिड़ापन, भ्रम, नसों में क्षति और भूख न लगने जैसी समस्याएं हो सकती हैं। इसकी कमी अक्सर ज्यादा शराब पीने वाले लोगों व मधुमेह रोगियों में होती है.

राइबोफ्लेविन (विटामिन - बी2)- यह विटामिन शारीरिक विकास, लाल रक्त कोशिकाओं के उत्पादन, एंजाइम्स के कार्य, कार्बोहाइड्रेट्स से ऊर्जा के उत्पादन और आयरन के अवशोशण व शरीर में उसके उचित उपयोग के लिए महत्वपूर्ण है। यह महत्वपूर्ण एंटीआक्सीडेंट ग्लूटाथियोन के फिर से निर्माण के लिए भी आवश्यक है। विटामिन बी2 की कमी से एनीमिया, मुंह और ओठों में जख्म , त्वचा रोग, गले में खराश , हृदय रोग हो सकती है.

नियासिन (विटामिन - बी3)- निकोटिनिक एसिड के रूप में नियासिन, एचडीएल कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित रखकर हृदय को स्वस्थ बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।नियासिन की कमी से पिलैग्रा (pellagra) रोग होता है। इसकी कमी से पाचन में परेशानी, त्वचा में सूजन, मानसिक भ्रम आदि लक्षण हो सकते है।

पेंटोथेनिक एसिड (विटामिन - बी5)- अध्ययनों से साबित हुआ है कि पैंटोथैनिक एसिड दाग-धब्बों से रहित स्वस्थ त्वचा के विकास में सहायक है।पैंटोथैनिक एसिड (विटामिन बी5) की कमी से त्वचा संबंधी रोग हो जाते हैं, जिसमें त्वचा में जलन, खुजली और चुभन होती है, मुहांसों की समस्या हो सकती है।

पाइरीडॉक्सिन (विटामिन - बी6)- हमारे शरीर में प्रोटीन और कार्बोहाइड्रेट से एनर्जी स्टोर करने में पाइरिडॉक्सिन (विटामिन बी 6) मदद करता है। पाइरीडॉक्सिन लाल रक्त कोशिकाओं में मौजूद हीमोग्लोबिन को बनाने में मदद करता है, ताकि शरीर में ऑक्सीजन का संचालन आसानी से हो सके। विटामिन बी 6 गठिया में होने वाली सूजन और दर्द को कम करने में सहायक है। पाइरिडॉक्सिन (विटामिन बी.6) की कमी से मानसिक तनाव, अवसाद, चिड़चिड़ापन हो सकता है।

बायोटिन (विटामिन - बी7)- बाल और त्वचा के समुचित विकास और निखार के कारण इसे सौंदर्य विटामिन के रूप में भी जाना जाता है। रक्त में ग्लूकोज के स्तर को नियंत्रित करके डायबिटीज के रोगियों के लिए मददगार होता है। वसा और कार्बोहायड्रेट के चयापचय के लिए यह महत्वपूर्ण है। बाल और नाखूनों को मजबूत रखता है, त्वचा में निखार लाता है, कोलेस्ट्रोल कम करता है, शरीर के वजन कम करने और रक्त में शक्कर के स्तर को नियंत्रित रखने में सहायक है।

विटामिन्स 'बी'

Vitamin - 'B'

<u>फोलिक एसिड (विटामिन बी9)</u>– इसे फोलेट भी कहा जाता है। फोलिक एसिड (विटामिन बी9) डीएनए संश्लेषण, विटामिन बी 12 के साथ मिलकर लाल रक्त कोशिकाओं के निर्माण और एमिनो एसिड के चयापचय के लिए आवश्यक है। यह गर्भ में पल रहे बच्चे के रीढ़ की हड्डी और नर्वस सिस्टम के गठन के लिए महत्वपूर्ण है।

<u>साइनोकोबालामिन (विटामिन बी12)</u>– यह शरीर में भोजन से एनर्जी रिलीज करने का मुख्य स्रोत है। यह हमारे मस्तिष्क, स्पाइनल कॉर्ड और नर्वस तंत्र के कुछ तत्वों के निर्माण में भी सहायक है। लाल रक्त कोशिकाओं के निर्माण, हीमोग्लोबिन बनाने और नर्वस सिस्टम को स्वस्थ रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसकी कमी से होने वाले रोग जैसे एनीमिया, नर्वस सिस्टम में विकार, हाथ–पैरों में झनझनाहट, जलन, जीभ में सूजन, कमजोरी, थकान डिप्रेशन, याददाश्त खोने की शिकायत हो सकती है.

Minerals

मिनरल्स
(खनिज)

आहारीय मिनरल्स वे खनिज होते हैं, जो भोजन के साथ शरीर को मिलते हैं एवं पोषण करने में सहायक होते हैं। शरीर के लिए पांच महत्त्वपूर्ण तत्व कैल्शियम, मैग्नेशियम, फास्फोरस, पोटाशियम और सोडियम अत्यावश्वक होते हैं। इनके अलावा अन्य महत्वपूर्ण किंतु सूक्ष्म मात्रिक तत्व (Trace Elements) हैं, क्रोमियम, कोपर, आयोडिन, लोहा, मैगनीज और जिंक।

कैल्शियम, कैलसिट्राओल, मैग्नीशियम, जिंक

कैल्शियम- आधुनिक जीवनशैली तथा अधिक शक्करयुक्त पदार्थ के उपयोग, शारीरिक श्रम कम होने, कमजोर पाचन, भोजन में कैल्शियमयुक्त पदार्थों की कमी, स्त्रियों में मासिक धर्म की अधिकता के कारण प्रौढ़ और युवा वर्ग के शरीर में कैल्शियम की कमी होती जा रही है. इसकी कमी से हड्डियाँ पोली हो जाती हैं, दातों की समस्या शुरू हो जाती है, कमर झुकने लगती है, शरीर में कमजोरी होने लगती है, मांस–पेशियों में हर समय अकडन होने लगती है. कैल्शियम हडिडयों और दांतों के बनाने और रख–रखाव के लिए, मांसपेशियों के सामान्य संकुचन के लिए, हृदय की गति को नियमित करने के लिए और रक्त की क्लॉटिंग करने के लिए आवश्यक है। दांतों की सड़न कैल्शियम की कमी का पहला लक्षण है. महिलाओं के शरीर को प्रतिदिन 1000 से 1200 मिली ग्राम कैल्शियम मिलनी चाहिए। इससे कम मात्रा कैल्शियम की कमी माना जाता है . भ्रूण की उचित गठन के लिए, एक गर्भवती महिला को लगातार कैल्शियम की भरपाई करनी चाहिए। अगर महिलाओं में कैल्शियम की कमी के लक्षण को नजरअंदाज कर दिया जाए तो इससे आस्टिओपरोसिस का खतरा भी पैदा हो जाता है। कैल्शियम सप्लीमेंट लेना कैल्शियम की कमी का एक उपचार है। उम्रदराज महिलाओं को कैल्शियम सप्लीमेंट की जरूरत ज्यादा होती है।

हमारा शरीर बचपन में अधिकतम 60 प्रतिशत कैल्शियम अवशोषित करता है और युवावस्था में 15 से 20 प्रतिशत कैल्शियम अवशोषित करता है. 50 वर्ष की ऊम्र के बाद कैल्शियम का अवशोषण अत्यधिक प्रभावित होता है। दूध, पत्तागोभी, पालक समेत सभी हरी पत्तेदार सब्जियां, केले, ब्रेड, पास्ता, सोया मिल्क, टोफु, बादाम, नॉनवेज और कई अनाज भी कैल्शियम के अच्छे स्त्रोत हैं। अगर कैल्शियम के सप्लिमेंट अधिक मात्रा में लिए जाएं तो गैस, पेट फूलना , कब्ज और किडनी में स्टोन बनने की समस्या हो जाती है।

आवश्यकता 6 माह तक के बच्चेः 200 mg. 7–12 माह : 260 mg. ,1-3 वर्ष : 700 mg, 4-8 वर्ष : 1,000 उह ,9–18 वर्ष : 1,300 mg, 19–50 वर्ष : 1,000 mg., 51–70 वर्ष (महिला) : 1,200 mg , 51–70 वर्ष (पुरुष): 1000 mg ,गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाएं: 1200 मि.ग्रा./ प्रतिदिन

कैल्शियम साईट्रेट मेलेट जल में घुलनशील एक कैल्शियम पूरक है. साईट्रिक और मेंलिक एसिड का यह कैल्शियम साल्ट है. Calcium Citrate Malate के साथ vitamin D3 का उपयोग स्त्री की गर्भावस्था, शिशु के दुग्धपान या रजोनिवृति महिलाओं में कैल्शियम की कमी को पूरा करने और कैल्शियम को अवशोषित करने के लिए किया जाता है।

1–इसका अवशोषण कैल्शियम कार्बोनेट की तुलना २२–२७० बेहतर और bioavailablity भी ज्यादा है।

2–इसे भोजन के पहले या बाद भी लिया जा सकता है।

3–अधेड़/बुजुर्ग लोग जो Hypochlorydia or Achlorydia जैसी बीमारी से ग्रसित हैं और इलाज की दवा लेने के कारण पेट में एसिड का स्त्राव कम हो जाता है, उनके लिए यह कैल्शियम का अति उत्तम स्त्रोत है।

4–किडनी में स्टोन नहीं बनने देता है।

कैलसिट्रायोल– कैल्सिट्राइयोल विटामिन D3 है जो आंत से कैल्शियम को अवशोषण कराने और इसके कार्य–कलापों के लिए आवश्यक है. यह शरीर के द्वारा कैल्शियम के अधिक अवशोषण में सहायता करता है. कैल्सिट्राइयोल हड्डियों के रख–रखाव और विकास के लिए शरीर के द्वारा कैल्शियम और फोस्फेट के अवशोषण को बढावा देता है. शरीर में किडनी या थायरायड की समस्या के कारण हड्डीयों में कैल्शियम की कमी हो जाती है. रक्त में कैल्शियम के स्तर बढाने के लिए कैल्सिट्राइयोल (calcitriol) एक उपयुक्त औषधि है. जब रक्त में कैल्शियम या फोस्फेट का स्तर अधिक हो, तो इसे नहीं दिया जाता है.

उपयोगः

- वैसे रोगियों में,जो लम्बे समय से किडनी फेल की समस्या से ग्रस्त हैं और डायलेसिस पर नहीं हैं पर उनकी पेराथायरोइड ग्लैंड बहुत अधिक सक्रिय हैं.
- वैसे रोगियों में, जिनकी किसी बीमारी या सर्जरी के कारण ,पेराथायरोइड ग्लैंड आवश्यकता से कम सक्रिय हैं और कैल्शियम की कमी से ग्रसित हैं.
- वैसे रोगी, जो डायलेसिस पर है और कैल्शियम की कमी से ग्रसित हैं.
  वैसे रोगी, जिनमे विटामिन डी की कमी के कारण हड्डियां मुलायम और कमजोर हो जाती है,

मैग्नीशियम– अच्छे स्वास्थ्य के लिए कैल्शियम, मैग्नेशियम और जिंक तीन बहुत ही महत्वपूर्ण खनिज हैं.यह कैल्शियम के शरीर के द्वारा अवशोषण करने में सहायता करते हैं। हृदय, मांस–पेशियों और किडनी को इस मिनरल की आवश्यकता होती है., शरीर के अंदर करीब 300 जैव–रासायनिक क्रियाओं में इसकी जरूरत होती है. शरीर में उपलब्ध पुरे मैग्नीशियम का 60% हड्डियों में 27% मांस–पेशियों में,6–7% कोशिकाओं मेंऔर 1% से कम कोशिकाओं के बाहर होता है.इसकी आवश्यकता दांत और हड्डियों के निर्माण और उचित वृद्धि के लिए होती है. यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि यह एन्जाईम को सक्रिय करती है , ऊर्जा पैदा करती है और शरीर में कैल्शियम, कोपर, जिंक, पोटैशियम, विटामिन डी और कई पोषक तत्वों के स्तर को नियंत्रित करती है.मैग्नीशियम स्नायु और शरीर के कई अंगों के उचित कार्य–कलापों के लिए भी आवश्यक है. पेट में मौजूद अम्ल को प्रभावहीन (Neutralize) करने और मल को आँतों में गतिशील करती है.

यह असामयिक प्रसव को रोकने में भी सहायक है. कैल्शियम और विटामिन डी के साथ यह भी हड्डियों की मजबूती और उनकी बनावट को बनाए रखती है. हमारे शरीर में मौजूद 'ग्लुटाथिओन'(बहुत ही प्रभावशाली एन्टीआक्सीडेंट) के कार्य के लिए भी मैग्नीशियम की आवश्यकता होती है.

इसे भूलना नहीं चाहिए की कैल्शियम और मैग्नेशियम साथ कार्य करते हैं. किसी एक की कमी होने से दुसरे का चयापचय (मेटाबोलिज्म) प्रभावित होता है. अगर मैग्नेशियम न देकर सिर्फ कैल्शियम– सप्लीमेंटदियाजाय तो साफ्ट टिश्यू जैसे ज्वायंट मे इसके जमा होने से आर्थ्रायटिस या किडनी में जमा होने से स्टोन बन सकता है. हड्डियों में शरीर का 60% मैग्नेशियम संचय रहता है। Calcium Citrate Malate के साथ vitamin D3 का उपयोग स्त्री की गर्भावस्था, शिशु के दुग्धपान या रजोनिवृति महिलाओं में कैल्शियम की कमी को पूरा करने के लिए किया जाता है.

जिंक– शरीर जिंक संग्रहित नहीं करता है, अतः इसे पुनः पूर्ण करने की आवश्यकता प्रति दिन होती रहती है. जब पेट या आंत की बीमारियों में मिनरल के अवशोषण वाधित हो जाते हैं, भोजन में जिंक की मात्रा थोड़ी अधिक होने चाहिए. शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढाने, कोशिकाओं के विभाजन और चयापचय, प्रोटीन और डी.एन.ए. की संरचना में भी जिंक सहायता करता है। जख्म भरने की प्रक्रिया के लिए भी जिंक बहुत उपयोगी है. हड्डियों के पुनर्निर्माण–चक्र में जिंक की महत्वपूर्ण भूमिका है. प्रोटीन और न्युक्लीक एसिड के संश्लेषण में एनजाइम के लिए सहायक कारक (co-factor) के तौर पर कार्य करता है.

शरीर में कैल्शियम प्रचुर मात्रा में व्याप्त है। सभी हड्डियां कैल्शियम से बनी हैं और कुल मात्रा का लगभग 1 फीसदी भाग रक्त में पाया जाता है। शरीर में कैल्शियम की कमी का सीधा और विपरीत प्रभाव हड्डीयों पर होता है जिसमें अस्थियां कमजोर हो जाती है. अस्थि (हड्डी) बनने की अपेक्षा उसका घिसना ज्यादा होने से, हड्डी की लम्बाई, मोटाई और चौड़ाई याने कि ठोसता कम होने लगती है और इस स्थिति को आस्टियोपोरोसिस (Osteoporosis) कहते हैं. 'आसटीओ' का अर्थ है हड्डी और 'पोरोसिस' का अर्थ है क्षिद्रमय. इस बीमारी में हड्डिया छिद्रपूर्ण और कमजोर हो जाती हैं।

30 साल की उम्र तक आते–आते हड्डियां क्षीण होनी शुरू हो जाती हैं. अधिकतर 40 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्तिओ में हड्डी टूटने का मुख्य कारण आस्टियोपोरोसिस ही होता हैं। 50 वर्ष से अधिक आयु के महिलाओ में आस्टियोपोरोसिस अधिक पाया जाता हैं। 50 साल की उम्रके बाद रीढ़ और कुल्हे की हड्डी के फ्रेक्चर की आशंका 55 प्रतिशत बढ़ जाती है. आस्टियोपोरोसिस के कारण हल्की सी चोट के कारण भी हड्डी टूटने का खतरा रहता हैं।

आस्टियोपोरोसिस से पीड़ित होने के अन्य कारण हो सकते हैं : कैल्शियम की कमी, आनुवंशिक, अत्यधिक मदिरा / धूम्रपान, व्यायाम की कमी, सामान्य से कम वजन, थायरॉइड / किडनी–रोग से ग्रसित होना , कम आयु में मासिक धर्म बंद हो जाना, रजोनिवृत्ति के बाद हार्मोनल बदलाव और कैल्शियम की कमी / एस्ट्रोजेन हार्मोन की कमी, कुपोषण , कुछ दवाइयों के साईड–इफेक्ट आदि.

Calcium Citrate Malate के साथ vitamin D3 का उपयोग स्त्री की गर्भावस्था, शिशु के दुग्धपान या रजोनिवृति महिलाओं में भी कैल्शियम की कमी को पूरा करने के लिए किया जाता है.

ओस्टीओपोरोसिस

आस्टियोपोरोसिस (Osteoporosis) / शरीर में कैल्शियम की कमी को पूर्ण करने के लिए मोरल फार्मास्युटिकल्स का प्रोडक्ट है : **'ओस्टोमोर टेबलेट्स'**

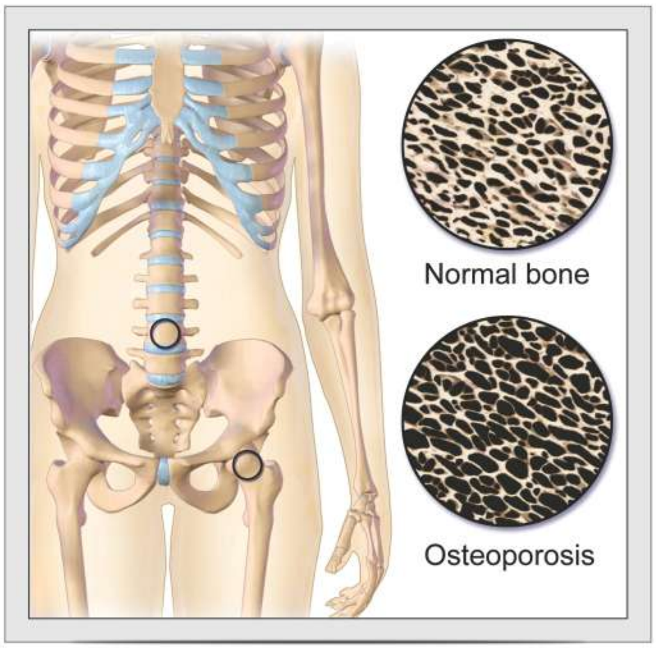

एन्टीआक्सीडेंटस

Antioxidant

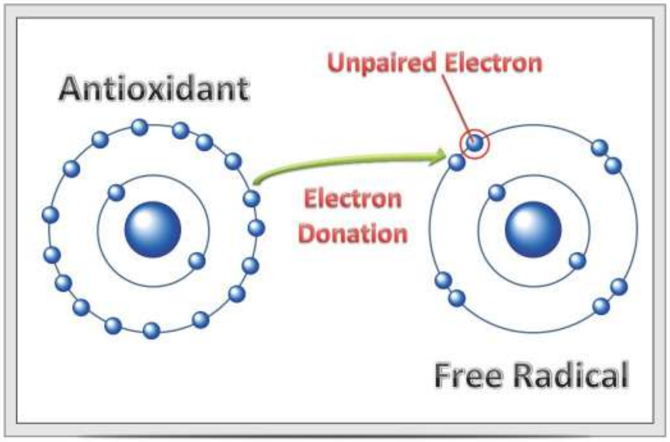

आक्सीजन का संचार हीमोग्लोबिन के लाल रक्त कणों के द्वारा होता है. रक्त प्रवाह में आक्सीजन, कोशिकाओं को जीवित रखने के लिए ली जाती है. इस क्रिया को आक्सीकरण कहते हैं. जब शरीर आक्सीजन का इस्तेमाल करता है तो यह ऊर्जा बनाने के लिए भोजन को विघटित करता है और इस दौरान आक्सीजन वसा के साथ मिलकर मुक्त कण (Free Radicals) भी बनाते हैं जो अस्थायी होते हैं. मुक्त कण के कारण पूरे शरीर में प्रतिक्रियाओं की श्रृंखला शुरू हो जाती है और इससे कई प्रकार के रोग पैदा होते हैं जैसे कैन्सर, मोतियाबिन्द, ब्लड–प्रेशर, चर्म–रोग, अदेरोस्क्लेरोसिस (Atherosclerosis), हृदयाघात, स्नायू–जनित रोग, जोड़ों में दर्द, सांस–संबंधी रोग इत्यादि.

एन्टीआक्सीडेंट, मुक्त कणों के कारण हुए प्रतिक्रियाओं की श्रृंखला को बाधित करता है और मुक्त कणों को नष्ट करता है जिससे शरीर में बीमारियों की सम्भावना बहुत कम हो जाती है. एन्टीऑक्सीडेंट को शरीर में कोशिकाओं की मरम्मत के साथ् ही त्वचा और दिमाग के लिए भी बेहतर माना जाता है।

वेजीटेबल आयल, ग्रीन टी ,प्याज, लहसून, पालक, हरी पत्तियों वाली सब्जियाँ, लौंग ,शकरकंद, गाजर, टमाटर ,फलियाँ , लाल मिर्च, कद्दू , गोभी, जामुन, सेव, अनार, गहरे रंग वाले अंगूर, संतरा ,केला, तरबूज, रसभरी, सूखे बेर, स्ट्राबेरी, अखरोट, आम, दूध अखरोट, आदि में एन्टीआक्सीडेंट भरपूर मात्रा में होती है. विटामिन A, विटामिन C, विटामिन E, सेलीनियम, लाइकोपीन, बीटा–कैरोटीन, अल्फा–लिपोइक एसिड, फ्लेवेनोइड्स, ल्यूटिन, इन्डोल्स , जिंक महत्वपूर्ण एन्टीआक्सीडेंट हैं.

एसिडिटी / गैस

गैस- अनियमित खान–पान के कारण और लगातार कब्ज के बने रहने पर गैस की समस्या हो जाती है और यही गैस्ट्रिक कई अन्य समस्याओं का कारण बनती हैं। जिसे ये समस्या होती है, उसे एसिड रिफ्लक्स की समस्या भी होने लगती हैं। गैस की शिकायत होने पर आंत में दर्द या गुदामार्ग से दुर्गन्धभरी गैस निकलती है. दुर्गन्ध का कारण होता है बड़ी आंत में बैक्टीरिया का होना। निगली गई हवा भी पेट में गैस बनने का प्रमुख कारण है। जल्दी–जल्दी खाने या पीने, धूम्रपान करने से कुछ लोग ज्यादा हवा अंदर ले लेते हैं, अधिकतर लोग एक दिन में कम–से–कम 15–20 बार गैस पास करते हैं। पेट में गैस बनने के सबसे आम लक्षण हैं पेट फूल जाना, पेट में दर्द होना, डकार आना और गैस पास करना।

एसिडिटी- एसिडिटी तभी होती है जब पेट में एसिड का अधिक स्राव होने लगता है। जब यह स्राव तेज हो जाता है तो हमें अंदर से ऐसा महसूस होता है कि हमारा सीना जल रहा है। अम्लपित्त या Acidity को कभी भी दुर्लक्ष न करे, यह आगे जाकर पेट में Ulcer भी निर्माण कर सकता है जिससे पेट में रक्तस्त्राव (bleeding) हो सकती है। हमारे शरीर में आमाशय (Stomach) में सामान्य तौर पर पाचन प्रक्रिया के लिए Hydrochloric Acid और Pepsin का स्त्रवन होता है। आमाशय और अन्ननलिका के जोड़ पर एक विशेष प्रकार की मांसपेशिया होती है जिन्हें निचला Esophageal Sphincter (LES) कहते है। यह LES केवल खाने– पीने के समय ही खुलती है और आहार आमाशय में पहुचने के बाद अपने आप बंद हो जाती है, जिस कारण आमाशय का Acid अन्ननलिका में नहीं पहुच पाता है। किसी कारणवश अगर LES मांसपेशिया कमजोर पड़ जाती है या उनकी संकुचनशीलता कम हो जाती है, ऐसे समय यह अपने आप खुल जाती है और आमाशय से acid और pepsin अन्न नलिका में आ जाता है। ऐसा बार–बार हो जाने पर अन्ननलिका में सुजन या घाव हो सकता है। इसके अलावा, आमाशय का उपरी हिस्सा कभी अन्न नलिका में Hernia की तरह आ जाता है जिसे Hiatus Hernia भी कहते है। ज्यादा खाँसी, उलटी या ज्यादा मेहनत का कम करने से यह हो सकता है। इस परिस्थिति में भी आमाशय से acid और pepsin अन्न नलिका में आ जाता है और अम्लपित्त या Acidity हो सकती है।

कुछ व्यक्तियों में सामान्य से ज्यादा Hydrochloric Acid का स्त्रवन होता है। इस कारण भी अम्लपित्त या Acidity बढ़ सकती है। कुछ व्यक्तियों में H-Pylori नामक Bacteria के कारण भी अम्लपित्त या Acidity बढ़ जाती है। 60 वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्तियों में इस bacteria के कारण अम्लपित्त या Acidity बढ़ जाती है।

हम क्या आहार लेते है और कितनी मात्रा में लेते है इसका सीधा असर हमारे पेट पर पड़ता है। नीचे दिए गए आहार लेने से अम्लपित्त या Acidity बढ़ जाती है :

- ज्यादा तीखा, मसालेदार या तला हुआ खाना खाने से
- जंक फूड के सेवन से ज्यादा भाराब पीने से
- ज्यादा चाय, कॉफी पीने से
- समय पर आहार न लेने से
- ठीक से न पका हुआ खाना खाने से
- बासी खाना खाने से
- अपनी भूख से बहुत कम या ज्यादा मात्रा में खाने से

मिचली और उल्टी

Nausea & Vomit

मिचली उल्टी का एक एहसास है. उल्टी पेट के विषाक्त पदार्थों को मुँह के द्वारा बाहर निकालने की प्रक्रिया है। दवाईयों के साइड–इफेक्ट, संक्रमण और सूजन, पेट में गड़बड़ी , चयापचय (metabolism) में असंतुलन के कारण, केंद्रीय स्नायु तंत्र (central nervous system) में गड़बड़ी, तनाव, डर, वेचैनी, खान–पान में अनियमितता , विषाक्त भोजन, ज्यादा मात्रा में एल्कोहल का सेवन, भोजन से एलर्जी , गर्भधारण, पेट की गड़बड़ी, बीमारी, एसिडिटी, यात्रा या माईग्रेन आदि कारणों से उल्टी या मिचली की शिकायत हो सकती है. ज्यादा उल्टियां होने लगे तो शरीर में पानी की कमी हो जाती है। गर्भावस्था की उल्टी विटामिन बी 1 या बी 6 की कमी कारण हो सकती है। चिकित्सक उल्टी का वास्तविक कारण जानकर ही उपयुक्त दवा खाने का परामर्श देते हैं.

एनाबोलिक स्टेराइड्स

प्रभाव

- क्कालीय मांस–पेशी (Skeletal Muscles) कोशिकाओं में प्रोटीन की मात्रा बढाना
- हड्डियों और मांस–पेशियों में अधिक घनत्व होना
- पुरुषोजनित गुण जैसे भारी आवाज, दाढी, मूंछ ,बाल का उगना,
- भूख बढ़ाना
- शारीरिक वजन का बढना
- पुरुषों में तारुण्य लाना
- ज्यादा उम्र के पुरुषों में कामेच्छा जगाना
- प्रौढ़ पुरुषों के हड्डियों में क्षरण कम करना
- किडनी फेल होने के कारण हुए एनीमिया को दूर करना
- हीमोग्लोबीन और लाल रक्त कण की मात्रा बढाना

इंगित– भूख में कमी, शारीरिक वजन में कमी, दुबलापन, कमजोरी, ओसटीओपोरोसिस, किडनी फेल के कारण हुए एनीमिया जैसी स्थितियों में.
मोरल फार्मास्युटिकल्स का प्रोडक्ट है – **'मोर्बोलिन इंजेक्शन'**

Inflammation

इन्फ्लामेशन

INFLAMMATION

जब शरीर के अन्दर या बाहर कोई इंज्यूरी या चोट होती है तो उस भाग या अंग में लाली आ जाती है, सूजन आ जाती है, दर्द प्रारम्भ हो जाता है और शरीर का वह भाग कम सक्रिय हो जाता है. इस प्रक्रिया को ईंफ्लामेशंन कहते हैं. सूजन किसी चोट, गर्भावस्था, और अन्य चिकित्सीय परिस्थितियों के परिणाम स्वरुप हो सकती है । इस स्थिति के लिए सबसे अच्छा इलाज क्या हो सकता है इसके बारे में जानकारी के लिए अपने डॉक्टर से सलाह लें।

सूजन को कम करने वाली दवायें NSAID (Non steroidal anti-inflammatory drugs),ऐसी दवाएं हैं जो दर्द और सूजन को कम कर सकती हैं। इस तरह की सबसे प्रचलित दवाओं में मुख्यतः एसिक्लोफेनेक (aceclofenac) आइबूप्रूफेन (ibuprofen) और डायक्लोफेनेक (diclofenac) होते हैं।

मोरफ्लाम–

मोरफ्लाम के प्रत्येक टेबलेट में है :

निमुसेलाइड 100mg

मोरफ्लाम–प्लस–

मोरफ्लाम–प्लस के प्रत्येक टेबलेट में है :

निमुसेलाइड 100mg

पैरासिटामोल 325mg

फास्ट्रेल–

फास्ट्रेल के प्रत्येक टेबलेट में है :

एसिक्लोफेनेक	100mg
पैरासिटामोल	325mg
सीरेशियोपेप्टिडेज	15mg

☑ निमुसेलाइड :

यह दर्द और ज्वर दूर करता है, साथ ही इन्फ्लेमेशन से हुए सूजन कम करने में भी सहायक है।

इंगित- इसका उपयोग जोड़ों के दर्द/सूजन, पीठ या कमर के दर्द/सूजन, मासिक धर्म के दर्द और सुजन, खेल–कूद के दौरान आये चोट से सूजन और दर्द आदि

वर्जित- लिवर रोग ग्रसित और पेप्टिक अल्सर से ग्रसित रोगियों में।

खुराक(वयस्क)- 100mg टेबलेट दिन में 2 बार/चिकित्सक के परामर्शुनासार

☑ पारासेटामोल-

यह एक विश्वसनीय दर्द निवारक दवा है। बुखार कम करने के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है।

खुराक (वयस्क)- 0.5 से 1g (अधिकतम 4g) रोज विभाजित डोजों में/चिकित्सक के परामर्शुनासार।

विशेष सावधानी- लिवर रोग और किडनी रोग.ग्रसित रोगीयों में।

☑ एसीक्लोफेनेक-

यह एक उत्तम प्रभावशाली एन्टीएनफ्लेमेटरी है।

इंगित- इसका उपयोग जोड़ों के दर्द/सूजन, पीठ या कमर के दर्द/सूजन, कंधे के दर्द/सूजन

खुराक (वयस्क)- 100mg टेबलेट दिन में 2 बार/चिकित्सक के परामर्शुनासार

विशेष सावधानी- पेट या आंत रोगग्रसित रोगियों में

वर्जित- पेट या आंत से रक्तस्त्राव, गर्भावस्था के अंतिम 3 महीने

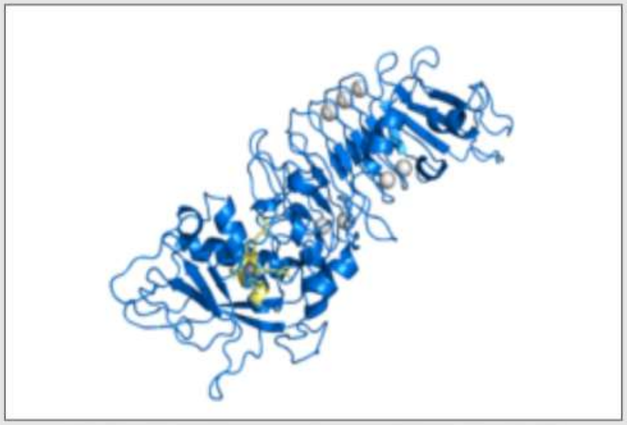

☑ सीरेशियोपेप्टिडेज :

ईंफ्लेम्ड जगह पर टूटे–फूटे, नश्ट अवयवों को रक्त और लीम्फेटिक नलिकाओं से अवशोषित कर और बाहर निकले असामान्य पदार्थों और प्रोटीन को तोड़ कर रक्त संचालन बढाता है। मवाद और रक्त भरे सूजन को कम करते हुए, पस को भी हटाता है। माइल्ड से मोडरेट दर्द और सूजन को तेजी से कम करता है।

अन्य NSAID की तरह साइड इफेक्ट नहीं है। प्रभावित जगह पर द्रव्य की मात्रा कम करता है जिसके कारण जख्म सूख जाते हैं और भरने में कम समय लगता है। यह एंटीबायोटिक के प्रभाव को भी बढाता है। Serratiopeptidase एन्जाइम इन निर्जीव ऊतकों और अन्य particles को डाइजेस्ट कर लेता है और सजीव ऊतकों को छोड़ देता है।

☛ **मोरफ्लाम के कॉम्पिटीटर ब्रांड्स**
निलाएड (केडिला, नाईज ;डा० रेड्डीजद्ध, निपिका ;इप्काद्ध, निम्सेड ;मेडलेद्ध

☛ **मोरफ्लाम-प्लस के कॉम्पिटीटर ब्रांड्स**
बेस्टोजेसिक प्लस (बेस्टोकेम), माएक्रोनीम-पी (माइक्रो)

कटपेन जेल

Cutpain Gel

इसके 30g ट्यूब में है:

एसेक्लोफेनक आइ.पी.	1.5%
ओलियम लिनि बी.पी.	3%w/w
कैप्सासिन यू.एस.पी.	0.01%w/w
बेंजाइल एल्कोहल आइ.पी.	1%w/w

एसेक्लोफेनक एक पावरफुल एंटी–इंफ्लामेटरी है जो सूजन,लाली, दर्द और ताप को कम कर इनसे जल्दी निजात दिलाता है। यह करीने से स्किन में अवशोषित होकर अपना पूरा प्रभाव डालता है।

कैप्सासिन स्किन पर होने वाले खुजली और इरिटेशन के विरुद्ध बहुत तीव्रता से कार्य कर दर्द की अनुभूति नहीं होने देता है।

ओलियम लिनि में आवश्यक फैटी ऐसिड्स होते हैं जिनका सौम्य एंटी–इंफ्लामेटरी प्रभाव है। इसका असर त्वचा पर आरामदायक है। मिथाइल सैलीसैलाइलेट भी एक विश्वसनीय एंटी–इंफ्लामेटरी है। मेंथॉल रक्त–नलिकाओं को फैलाता है और रक्त प्रवाह बढ़ाने में सहायक है। इरिटेशन नहीं होने देता है, दर्द दूर करने में सहायक है और इसका ठंढा–ठंढा असर सुखद एहसास कराता है। कट्पेंन जेल तैलीय त्वचा के लिए भी बहुत अनुकूल है। लोशन और फोम की तरह, बड़े और रोम वाले जगह पर बड़ी आसानी से फैल जाते हैं। जेल में चिपकने की समस्या नहीं होती है। त्वचा में बहुत आसानी से और तेज गति से अवशोषित होते हैं। यह विशेषता है कि जेल त्वचा पर तेजी से रगड़ी जा सकती है यह फैलने मे सक्षम है।

उपयोग विधि– प्रभावित जगह पर दिन में 3 से 4 बार लगायें, घिसें नही।

इंगित– कमर दर्द, मांस–पेशी/जोड़ों के दर्द, मोच, मांस–पेशी में कड़ापन, गर्दन में अकडन।

कट्पेंन जेल के कॉम्पिटीटर ब्रांड्स

रुमाजेसिक (जी लेब), एनाफ्लाम जेल (एल्बर्ट डेविड), बेस्टोजेसिक जेल (बेस्टोकेम), बोक्सर (रेडिसन), डायफाम जेल (सीफाम), गोजेल (इनोवा), फेंजेल (मनीष हेल्थ केयर)।

फीवा टेबलेट और फीवा सस्पेंसन

Feva/Feva Sus.

- **प्रत्येक फीवा टेबलेट में है :**
  पारासेटामोल 500mg
- **फीवा सस्पेंसन के प्रत्येक 5ml में है :**
  पारासेटामोल 125mg

इंगित– दर्द और ज्वर

खुराक– 0.5 से 1gm, अधिकतम 4gm प्रतिदिन विभाजित डोजों में/ चिकित्सक के परामर्शुनासार

सावधानी– लिवर या किडनी–रोग ग्रसित रोगी में।

फीवा के कमपीटीटर ब्रांड्स

काल्पोल, क्रोसिन (जी.एस.के.), जोजो (माइक्रो), लिट्किंग (बेस्टोकेम), मेटासिन (थेमिस) पायरीजेसिक (ईस्ट इंडिया)

Antibiotics & Antiseptics

मैक्सिकोम

MAXICOM

मैक्सिकोम मोरल फार्मास्युटिकल्स के द्वारा प्रोमोट किये जाने वाले सेफिक्सिम का ब्रांड है। मैक्सिकोम 3 रूप में उपलब्ध है।

- मैक्सिकोम 100 (Cefixime 100 mg)
- मैक्सिकोम 200 (Cefixime 200 mg)
- मैक्सिकोम सस्पेंसन (Cefixime 50mg/5ml)

सेफिक्सिम सिफेलोस्पोरिन वर्ग के तीसरी पीढी का एंटीबायोटिक है जो ग्राम पोजिटिव और ग्राम नेगेटिव बैक्टीरिया के विरुद्ध कार्य करता है. यह कई वैसे बैक्टीरिया को खत्म करने में सक्षम है जिन्होंने एंटीबायोटिक से अपना बचाव करने के लिए बीटा–लैकटेमेंज ईंजाईम उत्पन्न कर रखा है-

उपयोगः
मूत्र संस्थान के संक्रमण, श्वसन तन्त्र के ऊपरी और निचली भागों के संक्रमण
सामान्य खुराकः (वयस्क) 200–400 मिलीग्रा. प्रतिदिन एक बार या विभाजित डोजों में/ चिकित्सक के परामर्शुनासारः 2 साल से ज्यादा उम्र के शिशु में 8 मिलीग्रा. /किग्रा. प्रतिदिन एक बार या विभाजित डोजों में चिकित्सक के परामर्शुनासारः गर्भावस्था और स्तनपान करनी वाली महिलाओं में एवं किडनी रोग ग्रसित रोग में चिकित्सक के परामर्शुनासार

मेक्सिकोम के कुछ कम्पीटिटर ब्रांड्स और कम्पनियों के नाम

ए–बी सेफ (बेस्टोकेम), जीरो–माईल (रेवियन), सेफ्टास (ईंटास), जीफी (ऍफ.डी.सी.), सिफी (खंडेलवाल), जीफो

मोफ्लासिन-ओजेड

MOFLACIN-OZ

मोफ्लासिन-ओजेड के प्रत्येक फिल्म-कोटेड टेबलेट में है :

- ओफ्लोक्सासिन 200mg
- ओर्निडाजोल 500mg

ओफ्लोक्सासिन रोग पैदा करने वाले बैक्टीरिया का और ओर्निडाजोल रोग पैदा करने वाले अमीबा, जिआर्डिया ,ट्रायकोमोनास, क्लोस्टरीडीयम जीवाणुओं को खत्म कर देता है. अगर किसी व्यक्ति को बैक्टीरिया और प्रोटोजोअल (अमीबा, जिआर्डिया) दोनों के संक्रमण हों तो चिकित्सक अगर उपयुक्त समझें तो रोगी को मोफ्लासिन–ओजेड खाने की सलाह दे सकते है।

उपयोग:

डायेरिया (अमीबिएसिस, जिआरडिएसिस) डीसेन्ट्री, वेजायनायटिस, मसूड़ों में संक्रमण।

- **डायेरिया**– बार–बार शौचालय जाना और पेट से केवल पानी गिरना।
- **डीसेन्ट्री** – पेट में मडोड़ के साथ आंव और रक्त का आना।

खुराक (वयस्क): 1 टेबलेट दिन में 2 बार / चिकित्सक के परामर्शुनासार

मोफ्लासिंन-ओजेड के कुछ कम्पीटिटर ब्रांड्स और कम्पनीयों के नाम

जेंफ्लोक्स–ओजेड (मैनकाइंड), बोंफ्लोक्स (बेस्टोकेम), ब्रेक (फ्रेंको इंडियन) , ओ 2 (मेडले), क्लेम्प (डा.रेड्डीज), ओफ्लोक्स–ओजेड (सिप्ला), ओर्नोफ (एरिस्टो) .

क्लेवपेन

CLAVPEN

यह एमोक्सिसिलिन और क्लेवुलेनिक एसिड का संयोजित ब्रांड है, क्लेवपेन 2 रूपों में उपलब्ध है।

- क्लेवपेन 625 (एमोक्सिसिलिन 500mg + क्लेवुलेनिक एसिड 125mg)
- क्लेवपेन सस्पेन्सन (एमोक्सिसिलिन 200mg + क्लेवुलेनिक एसिड 28ण्5उहध्5उस

एमोक्सिसिलिन 'पेनिसिलिन' वर्ग का एंटीबायोटिक है जो ग्राम–पोजिटिव और ग्राम–नेगटिव बैकटीरिया के साथ ही उन बैक्टीरिया के विरुद्ध भी कार्य करता है जिन्होंने एंटीबायोटिक से अपने बचाव करने के लिए प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर ली है। ऐसा एमोक्सिसिलिन और क्लावुलेनिक एसिड के संयोजन से संभव हुआ है क्योंकि क्लेवुलेनिक एसिड पर बैक्टीरिया के प्रतिरोधक क्षमता का प्रभाव नहीं पड़ता है।

एमोक्सिसिलिन और क्लेवुलेनिक एसिड के संयोजन से लाभ–

- बीटा–लेक्टेमेंज के विशिष्ट गुण
- एक–दुसरे के अवशोषण पर एक–दूसरे का कोई प्रभाव नहीं.
- गैस्ट्रिक एसिड की मोजुदगी में भी स्थायित्व
- एमोक्सीसिलिन के ऊपर बैकटीरिया के प्रतिरोधक क्षमता का प्रभाव नहीं

इंगित– श्वसन तन्त्र संक्रमण, जनन–मूत्र संस्थान संक्रमण, त्वचा संक्रमण

सामान्य खुराक(वयस्क): क्लेवपेन 625mg टेबलेट दिन में 2 बार/ चिकित्सक के परामर्शुनासार

सामान्य खुराक (शिशु 40kg से कम वजन): 20–40 mg/kg/ प्रतिदिन 2 या 3 विभाजित डोज में प्रत्येक 8 या 12 घंटों पर / चिकित्सक के परामर्शुनासार.

क्लेवपेन के कुछ कम्पीटिटर ब्रांड्स और उनकी कम्पनीयों के नाम

औग्मेंटिन (जी.एस.के.), एमोक्लेव (मार्क), बेस्टोमेक्स (बेस्टोकेम), मेगाक्लेव (एलेम्बिक), मोक्सिला (रेवियन), नोवाक्लेव (सिप्ला).

मैक्सिकोम–ओ

MAXICOM-O

मेक्सिकोम–ओ के प्रत्येक फिल्म–कोटेड टेबलेट में है :

- सेफिक्सिम 200mg
- ओफ्लोक्सासिन 200mg

बीटा–लैक्टेमेज बनाने वाले कई बैक्टीरिया किसी एक एंटीबायोटिक से नष्ट नहीं होते हैं जैसे– स्यूडोमोनास, प्रोटिअस,स्टेफायलोकोक्कस, स्ट्रेप्टोकोक्कस के स्ट्रेंस. इस प्रकार के बैक्टीरिया ने कई ड्रग्स से अपने बचाव के लिए प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर ली है. इन्हें मारने के लिए दो एंटीबायोटिक की आवश्यकता हो सकती है. चिकित्सक ही इसके उपयोग के बारे मे फैसला करते हैं. मेक्सिकोम–ओ में सेफिक्सिम सीफैलोस्पोरीन वर्ग के तीसरी पीढी का एंटीबायोटिक है और ओफ्लोक्सासिन क्युनोलोंन वर्ग का एंटीबायोटिक है. दोनों एक साथ कई प्रकार के बैक्टीरिया को मारने की क्षमता रखते हैं और उपरोक्त वर्णित कठिन बैक्टीरिया का भी नाश कर देते हैं.

उपयोग:

हास्पीटल से उधृत संक्रमण, पी.आई.डी., श्वसन तन्त्र के निचली भागों के संक्रमण , मूत्र–संस्थान के संक्रमण, टाईफायड, ज्वर आदि

खुराक (वयस्क): 1 टेबलेट दिन में 2 बार / चिकित्सक के परामर्शुनासार

मेक्सिकोम-ओ के कुछ कम्पीटिटर ब्रांड्स और कम्पनीयों के नाम

एब–सेफ–ओ (बेस्टोकेम), एक्रोटेक्स–ओ (एक्रोन), ओम्निक्स–ओ (सिप्ला), जोटेक्सिम–ओ (जोटा).

मोफ्लासिन

MOFLACIN

'मोफ्लासिन' मोरल फार्मास्युटिकल्स के द्वारा प्रोमोट किये जाने वाले ओफ्लोक्सासिन का ब्रांड है.
मोफ्लासिन 3 रूपों में उपलब्ध है.

- मोफ्लासिन–200 (Ofloxain 200 mg)

ओफ्लोक्सासिंन क्वीनोलोन वर्ग का एंटीबायोटिक है जो ग्राम पोजिटिव और ग्राम नेगेटिव बैक्टीरिया के विरुद्ध कार्य करता है। यह कई वैसे बैक्टीरिया को खत्म करने में सक्षम है जिन्होंने एंटीबायोटिक से अपना बचाव करने के लिए बीटा–लैकटेमेंज ईंजाईम उत्पन्न कर रखा है।

उपयोग :
श्वसन तन्त्र के ऊपरी और निचली भागों के संक्रमण , न्युमोनिया, पी.आई.डी., मूत्र–संस्थान के संक्रमण

सामान्य खुराक (वयस्क)– २०० mg टेबलेट प्रतिदिन दो बार / चिकित्सक के परामर्शुनासार.

सावधानी: गर्भावस्था और स्तनपान करनी वाली महिलाओं में चिकित्सक के परामर्शुनासार.

मोफ्लासिन के कुछ कम्पीटिटर ब्रांड्स और कम्पनीयों के नाम

मोफ्लोक्स (मार्क), ओफ्लोक्स (सिप्ला), जो (एफ.डी.सी.), ओक्सा (रेवियन), जेनोसिन (स्टेनकेयर), ओफला (खंडेलवाल), ओफ्टेक (वांडर).

मोराडिन ऑइन्टमेंट

MORADIN

मोराडिन में निहित पोविडोंन आयोडिन (पोलीविनाइल पायरोलीडॉन आयोडीन) है जो व्यापक रेंज की एंटीसेप्टिक है जिसका उपयोग त्वचा के जख्म में हुए संक्रमण को खत्म या उसे रोकने के लिए किया जाता है। इसका उपयोग त्वचा के कटने, जलने, छिलने, फफोले पड़ने, खरोच आने में भी किया जाता है यह बैक्टीरिया के अलावा फफूंदी या फंगस, वायरस के विरुद्ध भी बहुत कारगर है। पोविडोंन आयोडिन का उपयोग पूरे विश्व में चिकित्सक कर रहें हैं।

उपयोग की विधिः

त्वचा के प्रभावित क्षेत्र को अच्छी तरह साफ करने के बाद मोराडिन मलहम की कुछ मात्रा लेकर लगाएं इसे खुला छोड़ सकते हैं या असंक्रमित (Sterile) पट्टी से ढंक भी सकते हैं। चिकित्सक के सलाह के अनुसार इसका प्रयोग करें। अगर त्वचा में इसके कारण कोइ प्रतिक्रिया हो तो डाक्टर की सलाह लें।

वर्जितः

इसका उपयोग ऐसे रोगियों में वर्जित है जो अतिसक्रिय थायरोयड ग्रन्थि (Hyperthyroidism) से ग्रसित होते हैं।

सावधानी :

त्वचा के केवल प्रभावित क्षेत्र पर (Local application) के लिए

पैकः 15gm ट्यूब

मोराडिन के कम्पीटिटर ब्रांड्स और उनकी कम्पनीयों के नाम

बीटाडीन (विन मेडिकेयर), वोकाडीन (वोकार्ड), सिप्लाडीन (सिप्ला), मोर्टेज (मोरेसी), पायोडीन (जी.एस.के.)।

ट्रायजोंन, ट्रायजोंन-एस और ट्रायजोंन-टी.जेड इन्जेकशन

Trixone, Trixone - S, Trixone - TZ

Trixone / Trixone-S / Trixone-TZ

ट्रायजोंन 1gm Inj. : यह सेफट्रायक्जोन है जो 'सिफेलोस्पोरिन' वर्ग के तीसरी पीढी का शक्तिशाली एंटीबायोटिक है. यह बहुत सारे ग्राम पोजिटिव और ग्राम नेगेटिव बैक्टीरिया को मारने की क्षमता रखता है.यह उन बैक्टीरिया को भी खत्म कर सकता है जिनके ऊपर दुसरे वर्ग के एंटीबायोटिक का कोई असर नहीं होता है. कई कठिन बैक्टीरिया ऐसे होते हैं जो सेफट्रायक्जोन से अपना बचाव करने के लिए ई.एस.बी.एल. (Extended Spectrum of Beta Lactamases) बनाते हैं जैसे क्लेबसिएला, ई.कोलाई बैक्टीरिया को मारने के लिए सेफ्टरायक्जोंन के साथ सलबैकटेम या टेजोबैकटेम मिलाया जाता है। सलबैक्टेम या टेजोबैक्टेम के ऊपर ई.एस.बी.एल. का कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता है। गर्भावस्था के दौरान यह सुरक्षित माना जाता है.

खुराक :

सामान्यतः (वयस्क)- 1 से 2gm रोज **(बच्चों मे)**- 50 से 75mg / kg body weight रोज

मेनिनजायटिसः (वयस्क)- 4gm i-v- शुरु मे और बाद मे 2gm i-v- एक बार रोजाना 10 दिनो तक (बच्चों मे) 75 –100mg / kg body weight 7 से 9 दिनो तक)

टायफाइडः (वयस्क)- 4gm i-v- रोज 2 दिनो तक शुरु मे और बाद मे 2gm i-v- एक बार रोजाना 2 दिनो तक **(बच्चों मे)**- 75mg / kg body weight 7 दिनो तक

ट्रायजोंन

ट्रायजोंन–1mg (सेफ्टरायक्जोंन 1000mg)

ट्रायजोंन-एस 1.5 gm

ट्रायजोंन–एस 1500 (सेफट्राइकजोन 1000mg + सल्बेकटेम 500mg)

ट्रायजोंन-टीजेड - 1125 mg

ट्रायजोंन–टी.जेड. 1125 (सेफट्राइकजोन 1000mg, टेजोबेकटेम 125mg)

ट्रायजोंन के कुछ कम्पीटिटर ब्रांड्स और उनकी कम्पनीयों के नाम

मोनोसेफ (एरिस्टो), जोन (एल्केम), जेट्री (नोवार्टिस), एक्टीसेफ (एक्टिव एच. सी.)

Multi-Vit/Multi-Mineral /Anti-Oxidants

फिटमैक्स

FitMax

(एंटीऑक्सीडेंट, लायकोपिन, मल्टीविटामिन मल्टीमिनरल और जिनसेंग)

फिटमेक्स के कैप्स्यूल मे कोरियाई जिनसेंग का सार 42.5mg, लायकोपिन 10% पाउडर 2000mg के साथ एल–लायसिन, ल्यूटिन, विटामिन सी, इ, बी–2, बी–6, बी–1, बी–12, डी–3, फोलिक एसिड, बायोटीन तो हैं ही और इसके अतिरिक्त आवश्यक खनिज या मिनरल्स भी हैं जैसे मैग्नेशियम, कैल्शियम, फोस्फोरस, आयरन, जिंक, मैंगनीज, सिलिकोन, कोपर, क्रोमियम, मोलीबिडीनम, भेनेडीयम, बोरोन, सेलेनियम, क्रोमियम, टिन और निकेल।

जिनसेंग:

- मानसिक एकाग्रता बढाता है।
- अवसाद, चिंता, थकावट और मानसिक दबाब दूर करता है।
- ऊर्जा प्रदान करता है।
- शरीर के प्रतिरोधक क्षमता को बढाता है।
- रक्त में शक्कर के स्तर को कम करने में लाभदायक है।
- रक्त में कोलेस्ट्रोल की मात्रा कम कर ह्रदय को स्वस्थ्य रखता है।
- नींद नहीं आने की शिकायत दूर करता है।
- नपुंसकता और स्तंभनदोष (erectile dysfunction) की शिकायतों को दूर करने में बहुत असरदार है।

एल–लायसिन की कमी से भूख की कमी, थकावट, एनीमिया, मिचली, चक्कर आना, बालों का झरना और प्रजनन तंत्र की शिकायतें हो सकती है। आंत से कैल्शियम को तेज गति से अवशोषित होने में सहायता करता है। **बायोटीन** शरीर के एंजाइम का एक घटक है। फैट और कार्बोह्यड्रेट को तोड़ देता है। आँखों, नाक और मुंह के इर्द गिर्द होने वाले पपडीदार फुंसी तथा बालों के पतले होने की समस्याओं से निजात दिलाता है। बालों और नाखूनों को मजबूत बनाता है। ब्लड सुगर को नियंत्रित रखता है। ल्यूटिन एक कैरोटीनाईड विटामिन है जो बीटा कैरोटीन और विटामिन A से सम्बंधित है। यह आँखों के लिए एक उत्तम विटामिन है। यह प्रकाश को फिल्टर करती है और आँखों को सूर्य के प्रकाश के द्वारा क्षतिग्रस्त होने से रक्षा करती है। मोतियाबिंद नहीं बढ़ने देने में सहायक है।

पैक: 10X10 कैप्स्यूल्स

खुराक (व्यस्क) : प्रतिदिन एक कैप्सूल चिकित्सक के परामर्शुनासार

फिटमैक्स के कम्पीटिटर ब्रांड्स और उनकी कम्पनीयों के नाम:

बायोवायटल (माईक्रो लेब) पोलीबिऑन (मर्क)एम्ब्रोसिया (ए.एफ.डी.)
जिन्सोमा (एलेम्बिक) रीवायटल (रैनबैक्सी)

मोरोफर गोल्ड

Morofer Gold

मोरोफर गोल्ड के प्रत्येक 15ml में है :

फेरस ग्लायसिन सल्फेट (Equivalent to Elemental Iron) :	50mg
फोलिक एसिड :	1.5mg
विटामिन बी 12 :	7.5mcg
जिंक सल्फेट मोनोहायड्रेट (Equivalent to Elemental Zinc) :	2.5mg
डी–बायोटीन :	100mcg

फेरस ग्लायसिन सल्फेट:

यह मुंह के द्वारा लिए जाने वाले और प्रचलित आयरनों की अपेक्षा बेहतर है क्योंकि:

- यह विशेष कर जब लिक्विड के रूप में हो तो इसकी बायोएवैलेबिलिटी बहुत ही ज्यादा रहती है। किसी औषधि या पदार्थ की उसके क्रिया करने वाले स्थान पर उपलब्धि को बायोएवैलेबिलिटी कहते हैं।

- इसके जठरांत्रिय पा र्व प्रभाव (Gastrointestinal side effects) तुलनात्मक रूप से अधिक कम हैं।

- आयरन की कमी से होने वाली एनीमिआ और उससे जुड़े स्व–प्रतिरक्षित जठरशोथ और एच.पायलोरी जठरशोथ (autoimmune gastritis and Helicobacter pylori gastritis) जैसे रोग में भी विशेष कर संतोषजनक रूप से अत्यधिक प्रभावी है। Helicobacter pylori एक प्रकार का बैक्टीरिया है।

फोलिक एसिड:

फोलिक एसिड को विटामिन बी–9 या फोलेट के नाम से भी जाना जाता है। यह विटामिन बी–9 का जल में घुलनशील रूप हैं। यह रक्त कोशिका के निर्माण, वृद्धि और स्वास्थ्य के लिए वयस्क या बच्चों में समान रूप से आवश्यक है। गर्भवती महिला के लिए गर्भधारण के पहले और गर्भावस्था दोनों स्थितियों में 400 माइक्रोग्राम फोलिक एसिड प्रतिदिन लेना आवश्यक है। इससे गर्भ में पल रहे बच्चे के मस्तिष्क या स्पाईनल कोर्ड में किसी तरह के विकार होने की संभावना बहुत ही क्षीण हो जाती है।

विटामिन बी-12:

विटामिन बी–12 को cobalamin कहा जाता है। यह एक पानी में घुलनशील विटामिन है। यह ब्रेन, स्पाइनल कॉर्ड और नर्व्स के कुछ तत्वों की रचना में भी सहायता है। प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के अलावा विटामिन बी–12 हमारी कोशिकाओं में पाए जाने वाले जीन डीएनए को बनाने और लाल रक्त कण बनाने में भी सहायता करता है। पाचन और तंत्रिका प्रणाली को स्वस्थ्य रखने के लिए भी यह महत्वपूर्ण है।

जिंक:

यह हमारी रोग–प्रतिरोधक क्षमता और प्रोटीन के संश्लेषण के लिए आवश्यक है। आयरन और जिंक दोनों ही लाल रक्त कण के निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक है। दोनों के एक साथ लेने से लाल रक्त कण की संख्या बढ़ती है और हेमोग्लोबींन का स्तर भी बढ़ने लगता है।

डी-बायोटिन (विटामिन बी-7)

यह एक पानी में घुलनशील विटामिन है। बायोटिन के 8 प्रकार के विभिन्न रूप हैं जिनमे डी–बायोटीन ही प्राकृतिक है और पूर्ण रूप से विटामिन है। यह भोजन को ग्लूकोज में बदलता है जिससे शरीर को ऊर्जा मिलती है, फैटी एसिड्स और एमिनो एसिड्स बनाती है जो प्रोटीन के संरचनात्मक इकाइयाँ होती हैं। बालों और ऊंगलियों के नाखूनों को स्वस्थ रखने के लिए भी यह आवश्यक है क्योंकि–बायोटिन बालों के जड़ों और नाखूनों की कोशिकाओं में प्रोटीन और एमिनो एसिड्स के चयापचय को सक्रिय करता है।

इंगित:

आयरन की कमी के कारण एनीमिया

खुराक :

(वयस्क): 10ml 2 बार प्रतिदिन भोजन के बाद / चिकित्सक के परामर्शुनासार

(बच्चे): 5.10ml 2 बार प्रतिदिन भोजन के बाद / चिकित्सक के परामर्शुनासार

पैक : 300ml

मोरोफर गोल्ड के कम्पीटिटर ब्रांड्स और उनकी कम्पनीयों के नाम:

हेम्फर (एल्केम) एस्टायफर (टेबलेट इंडिया) आयरून (रेवियन)
डेक्सोरेन्ज (फ्रेंको–इंडियन) विटामोंन (सिप्ला)

एलेक्ट्रो-एम् - ओ.आर.एस.

Electro-M - O.R.S.

डायरिया या दस्त लगने पर एक ओर जहाँ शरीर में से पानी व खनिज लवण बाहर निकल जाते हैं वहीं शरीर को पोषण भी समुचित रूप से नहीं मिल पाता। डायरिया प्रायः वायरल संक्रमण के कारण होता है। कभी–कभी यह पेट के कीड़ों या बैक्टेरिया के संक्रमण से भी हो सकता है। फूड प्वॉयजनिंग भी डायरिया का एक महत्वपूर्ण कारण है। कुपोषित बच्चों में डायरिया का ज्यादा प्रकोप रहता है। अत्यधिक डायरिया से मृत्यु भी हो सकती है। डायरिया से पीड़ित बच्चों को बिना चिकित्सकीय सलाह के भी ओ.आर.एस. का घोल दिया जा सकता है। इससे उनके शरीर में जल की कमी नहीं होगी। जहाँ गंभीर डीहायड्रेशन या निर्लजीकरण हो तब रोगी को चिकित्सक को अवश्य दिखाएँ और वे चाहेंगे तो **I.V. fluid** से या किसी उचित विधि से स्थिति में सुधार ला सकते हैं।

डायरिया के लक्षण :

पेट में मरोड़ पड़ना, दर्द होना बार–बार पानी के समान दस्त होना, कमजोरी महसूस होना, उल्टी होना, बुखार होना आदि अतिसार या डायरिया के लक्षण हैं। एलेक्ट्रो–एम् – ओ.आर.एस. घोल के जरिये शरीर को इलेक्ट्राल, ग्लूकोज और जल की उचित मात्रा मिलती है।

एलेक्ट्रो-एम् - ओ.आर.एस. घोल तैयार करने का तरीका :

इसे तैयार करने के पहले साबुन से हाथ को अच्छी तरह से धो लें। पैकेट पर लिखे दिशा–निर्देशों को पूरी तरह से पढ़ लें। किसी साफ बर्तन में पैकेट में पैक किये पावडर डालकर उसमे पानी की उचित मात्रा डाल कर घोल को स्वच्छ चम्मच की सहायता से तैयार कर लें। इसमें अतिरिक्त चीनी नहीं मिलाएं। इस घोल को अच्छी तरह मिलाने के बाद साफ कप में पिलाना चाहिए। बच्चों को बोतल से इस घोल को नहीं पिलाना चाहिए और न ही इसका सेवन दूध, फलों के रस, साफ्ट ड्रिंक या सूप के साथ करना चाहिए। 2 वर्श से कम आयु के बच्चों को दस्त के बाद 75 से 125ml ओ.आर.एस. घोल और इससे अधिक उम्र के बच्चों को 125 से 250ml लेना चाहिए।

पैक : पैकेट 21 ग्राम

एलेक्ट्रो-एम् - ओ.आर.एस.के कम्पीटिटर ब्रांड्स और उनकी कम्पनीयों के नाम:

एलेक्ट्रल (एफ.डी.सी.), बेस्टोलाइट (बेस्टोकेम), सेरेलाइट (रेपटाकोस), एलेक्ट्रोबिओन (मर्क)

ऑस्टोमोर

Ostomor

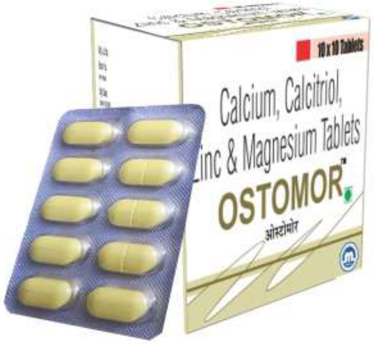

<u>कैल्शियम साईट्रेट मेलेट</u>– कैल्शियम साईट्रेट मेलेट जल में घुलनशील कैल्शियम पूरक है. साईट्रिक और मेंलिक एसिड का यह कैल्शियम साल्ट है. Calcium Citrate Malate के साथ vitamin D3 का उपयोग स्त्री की गर्भावस्था, शिशु के दुग्धपान या रजोनिवृति महिलाओं में कैल्शियम की कमी को पूरा करने के लिए किया जाता है।

<u>कैलसिट्रायोल</u>– कैलसिट्रायोल विटामिन डी3 है जो आंत से कैल्शियम को अवशोषित कराने और इसके कार्य–कलापों के लिए आवश्यक है. यह शरीर के द्वारा कैल्शियम के अधिक अवशोषण में सहायता करता है. कैलसिट्रायोल हड्डियों के रख–रखाव और विकास के लिए शरीर के द्वारा कैल्शियम और फोस्फेट के अवशोषण को बढावा देता है. शरीर में किडनी या थायरायड की समस्या के कारण हड्डियों में कैल्शियम की कमी हो जाती है. रक्त में कैल्शियम के स्तर बढाने के लिए कैलसिट्रायोल (calcitriol) एक उपयुक्त औषधि है।

<u>मैग्नेशियम</u>– अगर मैग्नेशियम न देकर सिर्फ कैल्शियम सप्लीमेंट दिया जाय तो साफ्ट टिश्यू जैसे ज्वायंट मे इसके जमा होने से आर्थ्रायटिस या किडनी में जमा होने से स्टोन बन सकता है. हड्डियों में शरीर का 60% मैग्नेशियम संचय रहता है। Calcium Citrate Malate के साथ vitamin D3 का उपयोग स्त्री की गर्भावस्था, शिशु के दुग्धपान या रजोनिवृति महिलाओं में कैल्शियम की कमी को पूरा करने के लिए किया जाता है.

<u>जिंक</u>– शरीर जिंक संग्रहित नहीं करता है, अतः इसे पुनः पूर्ण करने की आवश्यकता प्रति दिन होती रहती है. जब पेट या आंत की बीमारियों में मिनरल के अवशोषण वाधित हो जाते हैं, भोजन में जिंक की मात्रा थोड़ी अधिक होने चाहिए. शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढाने, कोशिकाओं के विभाजन और चयापचय, प्रोटीन और डी.एन.ए. की संरचना में भी जिंक सहायता करता है। जख्म भरने की प्रक्रिया के लिए भी जिंक बहुत उपयोगी है. हड्डियों के पुनर्निर्माण–चक्र में जिंक की महत्वपूर्ण भूमिका है. प्रोटीन और न्युक्लीक एसिड के संश्लेषण में एनजाइम के लिए कोफेकटर के तौर पर कार्य करता है.

ऑस्टोमोर के प्रत्येक फिल्म-कोटेड टैबलेट में है:

कैल्शियम साईट्रेट मेलेट	1000mg
कैलसिट्रायोल	0.25mcg
मैग्नेशियम हाइड्रोक्साइड	100mg
जिंक सल्फेट मोनोहाईड्रेट	7.5mg

<u>इंगित</u>: ओस्टीओपोरोसिस, भारीर में कैल्शियम की कमी में

ऑस्टोमोर के कम्पीटिटर ब्रांड्स और उनकी कम्पनीयों के नाम:

केल 360 (सिप्ला), कैलसीकैल – के 2 (सोलेस), ऑस्टियम के 2 (मेडले)

<u>खुराक</u>: प्रतिदिन एक टैबलेट / चिकित्सक के परामर्शुनासार

मोरन्यूट्री प्लस

More Nutri Plus

मोरन्यूट्री प्लस पाऊडर

मोरन्यूट्री प्लस 200 ग्राम के पैक में उपलब्ध है और इसके संघटक हैं रू माल्टोडेक्सट्रिन, गऊ–कोलोस्ट्रम, कोकोआ सोलिड्स, सोया प्रोटीन, मिल्क सोलिड्स, डी.एच.ए., माल्ट का सार, स्टीविया–पत्तियों के सार, विटामिन ए, सी, डी3, बी1, बी2, बी12, कैल्शियम, आयरन, जिंक और मिनरल्स. बच्चों से लेकर बूढ़ों तक हर उम्र के लोगों के लिए बेहद जरूरी होता है प्रोटीन।

प्रोटीन हमारे शरीर में हर ऊतक, अंग और मांसपेशियों का निर्माण खंड है। यह ऊर्जा का प्रमुख स्रोत्र है. प्रोटीन अणु एक जटिल संरचना है जो 20 एमिनो एसिड नामक अणुओं से बनी होती है। इन 20 में से नौ ष्आवश्यक (Essential amino acids) हैं, जिसका अर्थ है कि शरीर उन्हें अपने आप नहीं बना सकता है। अन्य 11 को अन्य प्रोटीन या पोषक तत्वों से बनाया जा सकता है। कैलोरी ऊर्जा यानि एनर्जी को मापने की एक इकाई है. प्रोटीन में प्रति ग्राम 4 कैलोरी है, जिसका मतलब है कि हमें प्रति दिन 50–175ग्राम की आवश्यकता है।

माल्टोडेक्सट्रिन एक पौष्टिक पॉलीसेकेराइड है. इसमें मिठास बहुत ही कम होती है . प्रोडक्ट में इसके एडिटिव होने के कारण प्रोडक्ट की घुलनशीलता और शैल्फ लाईफ बढ़ जाती है, कम से कम नमी अवशोषित होती है. प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों में वसा या चीनी के विकल्प के रूप में यह कार्य करता है. इसके उपयोग से फैट या वसा में वृद्धि नहीं होती है. माल्टोडेक्सट्रिन का ग्लायसेमिक इंडेक्स 106 से 136 होता है जिसके कारण हायपोग्लायसिमिया (रक्त में ग्लूकोज का कम स्तर) से ग्रसित व्यक्ति में इसके प्रयोग से ब्लड–शुगर का स्तर बढ़ने लगता है. फास्ट कैलोरी, एनर्जी और मसल्स बिल्डिंग के लिए यह एक उत्तम स्त्रोत्र है

गौ–पीयूष (Cow-Colostrum) एन्टीबडीज इम्यूनोग्लोबिन , एमिनो एसिड्स, विटामिन्स और पोषक तत्वों से स्मृद्ध होता है और इसके नियमित उपयोग से रोग प्रतिरोधक क्षमता और पाचन–शक्ति में वृद्धि होती है , दस्त और अन्य पाचन–विकारों की रोक–थाम के लिए यह अत्यंत लाभदायक है. गौ कोलोस्ट्रम में मौजूद कई प्रकार के ग्रोथ–फैक्टर्स कोशिकाओं के सुचारू संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. इसमें मौजूद एन्टीआक्सीडेंट कैंसर–कोशिकाओं को नष्ट कर सकती है. कोलोस्ट्रम में निहित लेप्टिक एसिड थाइरोइड, भूख की कमी, मेटाबोलिज्म को नियंत्रित करता है. इस प्रकार यह अनेक प्रकार के रोगों की रोक थाम और उपचार के लिए प्रसिद्ध है.

कोकोआ सोलिड्स कोकोआ बीन्स का नमी–रहित रूप है. यह फ्लेवोनोयड्स, विटामिन्स और मिनरल्स (कैल्शियम, कोपर, मैग्नेशियम, फोस्फोरस, पोटेशियम, सोडियम और जिंक) से स्मृद्ध है और सेरोटोनिन

के स्तर में वृद्धि करता है जिससे मानसिक स्ट्रेस में कमी होती है, ब्लड–प्रेशर और कोलेस्ट्रोल के स्तर को भी नियंत्रित करता है.
मिल्क सोलिड्स दूध के जल–रहित सूखे पाउडर को कहते हैं. इसके उपयोग से हड्डियों में मजबूती, त्वचा में चिकनापन, रोग–प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि, नियंत्रित ब्लड–प्रेशर, दांतों की सुरक्षा, मोटापा में कमी आती है और यह कई प्रकार की बीमारियों की रोक–थाम के लिए भी महत्वपूर्ण है.

डी.एच.ए.(डोकोसा हेक्सीनोइक एसिड)– यह डिमेंशिया, कोरोनरी धमनी रोग, टाइप 2 मधुमेह, कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने, उम्र से संबंधित मैकुलर विकार की रोकथाम में अत्यंत लाभदायक है. बच्चे के मस्तिष्क के समुचित विकास के लिए यह बहुत मददगार है. गर्भवती महिलाओं को रोजाना 400 उह डीएचए की आवश्यकता होती है.

सोया प्रोटीन में सेचुरेट फैट की मात्रा बहुत कम पायी जाती है जिसके कारण हृदय रोग (Heart Diseases) , स्तन कैंसर (Breast Cancer)और अन्य बिमारियों से हमारा बचाव होता है। इसके उपयोग से हड्डियां मजबूत रहती है, हड्डियों से जुडी समस्या को दूर करती है, इम्युन सिस्टम मजबूत होता है, आँतों में स्थित कोलेस्ट्रोल की सफाई कर देता है, इसमें मिलने वाला फाइबर ब्लड ग्लूकोज को कम करने में मदद करता है। बाडी–बिल्डिंग और वजन बढ़ाने वालों के लिए भी सोया प्रोटीन एक अच्छा विकल्प है।महिलाओं के मासिक धर्म बन्द होने से शरीर में एस्ट्रोजन की मात्रा कम होने लगती है. जिससे घुटनों में दर्द, पेट का भारी होना, मासिक धर्म में होने वाले सूजन, कमर में दर्द जैसी समस्याओं हो सकती हैं. सोया प्रोटीन ऐसी स्थितियों में निजात दिलाता है। महिलाओं में हड्डियों को कमजोर होने की ओस्टियोपोरोसिस के खतरे से बचा सकता है.
स्टीविया में कैलोरी की मात्रा किसी कृत्रिम स्वीटनर की तुलना में बहुत हे कम होती है. स्टीविया शक्कर की तुलना में 2 सौ गुना अधिक मीठा होता है लेकिन इस मिठास का स्वास्थ्य में किसी प्रकार का साइड इफैक्ट नहीं होता है। इसके अलावा यह शरीर द्वारा आसानी से अवशोषित (Absorbed) हो जाता है। यही कारण है कि स्टीविया का उपयोग मधुमेह रोगियों के लिए बहुत ही लाभकारी होता है।
इस प्रकार, मोरन्यूट्री प्लस प्रोटीन पाउडर एक उत्तम गुणवत्ता वाली उत्तम फार्मूलेशन है जो अनावश्यक फैट और कैलोरीज को बिना ओवरलोड किये प्रोटीन और पोषण दोनों की तालमेल बनाये रखता है, एनर्जी का बेहतर स्त्रोत है, इम्युन सिस्टम मजबूत करता है और क्षतिग्रस्त कोशिकाओं का पुनरुद्धार करता है. इसका उपयोग वजन नियंत्रित करने और दुर्बल मसल्स को मजबूत बनाने के लिए भी किया जा सकता है.
मोरन्यूट्री प्लस प्रोटीन पाउडर एक आहारपूरक है. इस प्रोडक्ट का आशय किसी रोग के निदान, उपचार या रोक–थाम के लिए नहीं है.
किसी व्यक्ति को प्रतिदिन कितनी प्रोटीन की आवश्यकता है यह इस बात पर निर्भर करती है कि उसकी क्रियाशीलता का स्तर, उम्र, मांसपेशियों में गठीलापन, वर्तमान स्वास्थ्य कैसा है.
सामान्य खुराक (वयष्क) : मोरन्यूट्री प्लस प्रोटीन पाउडर से भरी 2 चम्मच को 250 ml गुनगुने पानी या दूध में मिलाकर प्रत्येक दिन 2 बार.
(प्रोटीन का DRI यानि Dietary Reference Intake 0.8 gm / kg of body weight).
पैक: 200 ग्राम

मोरवायटल सिरप

Morvital

मोरवायटल सिरप मल्टीविटामिन, मल्टीमिनरल और एन्टीआक्सीडेंट की सिरप है जिसमे द्रव्यनुमा **(liquid)** मल्टीविटामिन सिरप की अनेक विशेषताएं निहित हैं जैसेः

- रक्त में शीघ्रता से आत्मसात्करण या मिलना (Assimilation).
- लगभग 95% अवशोषण (Absorption).
- विटामिन कैपस्यूल की तुलना में 3 से 4 गुणा ज्यादा संकेंद्रण (Concentration).
- उच्चतम बायोएक्टिविटी (Bioactivity).
- पाचन तन्त्र के द्वारा द्रवीय विटामिन्स और मिनरल्स का सुगमतापूर्वक अवशोषण
- मुक्त तत्वों (Free Radicals) के दुष्प्रभावों से बचाव।

पैकः 100ml

मोरवायटल सिरप के कम्पीटिटर ब्रांड्स और उनकी कम्पनीयों के नामः

खुराकः वयस्क–
5 से 10ml प्रतिदिन दो बार / चिकित्सक के परामर्शानुसार

फ्रीकेड (वोकार्ड), कारनिटोर (ऐल्डर), मेनोफिट (अजन्ता), एकरोटिन एन टी (फ्रैंको इंडियन), बी एन सी (एग्लोमेड), ग्रोमिन (मेडले), विटामिन – जेड (सिप्ला)

मोरवायटल-एल

Morvital-L

मानसिक तनाव, बीमारी, असंतुलित या अपुष्ट भोज्य पदार्थों के इस्तेमाल , भूख की कमी, आरोग्यलाभ जैसी स्थितियों में सामान्यतः शरीर में विटामिन्स और मिनरल्स की कमी हो जाती है, भोजन से पोषक तत्वों को अवशोषित करने की क्षमता प्रभावित होने लगती है. इन कारणों से शरीर को विटामिन्स और मिनरल्स की अधिक आवश्यक्ता होती है. इसके साथ शरीर में मुक्त कणों या फ्री रेडिकल्स को नष्ट करने के लिए एन्टीआक्सीडेंट की भी जरूरत पड़ती है क्योंकि इन फ्री रेडिकल्स के कारण अनेक रोग उत्पन्न हो सकते हैं.

आमतौर पर मल्टी–विटामिन्स को सेहत के लिए फायदेमंद माना जाता रहा है। अगर शरीर में जरूरी तत्व और विटामिन्स की कमी है, तो उसे चिकित्सक मल्टी–विटामिन्स के जरिए पूरा करते हैं. किसी पोषक तत्व की कमी को दूर करने के लिए चिकित्सक के सलाह लेकर ही मल्टीविटामिन,मिनरल्स का सेवन करना चाहिए.

मोरवायटल–एल सिरप में विटामिन्स (बी5,बी1,बी2,सी,डी3,ई,ए),और मिनरल्स के साथ प्रत्येक 10उस में 2000उबह लायकोपीन भी सम्मिलित है. लायकोपीन की एन्टीआक्सीडेंट गतिविधि बीटा–कैरोटीन और एल्फा–टोकोफेरोल की अपेक्षा अधिक है. यह सूजनरोधी (Antiinflammatory), उत्परिवर्तनरोधी(Antimutagenic), कैन्सररोधी (Chemopreventive), प्रजनन–शीलरोधी (Antiproliferative) एन्टीहायपोकोलेस्ट्रोलेमिक, हृदय को सुरक्षित रखने (Cardioprotective) के गुणों से भी पूर्ण है. लाइकोपीन एक पोटेंट एंटीऑक्सिडेंट है जो मानव शरीर को कई बीमारियों से बचाता है। यह सेल्स डैमेज को रोकता है और स्वस्थ कोशिकाओं के उत्पादन को बढ़ावा देता है।

खुराक : 5–10ml प्रतिदिन दो बारधचिकित्सक के परामर्शुनासार

पैक : 200ml

मोरवायटल-एल सिरप के कम्पीटिटर ब्रांड्स और उनकी कम्पनीयों के नाम:

एकोफिट–एल (टोरस) लायकोरेड (जैग्सन पोल) इंडोक्स प्लस (मार्क)

Gastro

गटमोर

Gatmore

गटमोर के बारे में जानने के पहले यह जान लें कि प्रोबायोटिक और प्रीबायोटिक किसे कहते हैं ? इसे डॉक्टर्स क्यों प्रेसक्राइब करते हैं ? प्रोबायोटिक्स और प्रीबायोटिक्स मानव शरीर के डाईजेस्टिव सिस्टम के विशेष भाग गट या आंत के उचित कार्यों को संपादित करने में सहायक होते हैं द्य ये दोनों भोजन के डायजेशन प्रक्रिया में महत्वपूर्ण रोल अदा करते हैं, आँतों में उपस्थित लाभदायक और हानिकारक बैक्टीरिया की संख्या में संतुलन बनाए रखने के लिए प्रोबायोटिक्स की महत्वपूर्ण भूमिका है |

इसके अतिरिक्त ये मानसिक स्वास्थ्य में सुधार, हड्डियों को मजबूती प्रदान करने, मोटापा कम करने, प्रतिरक्षा–प्रणाली को संबल देने, ह्रदय स्वस्थ रखने और चिंता, अवसाद, आटिज्म, ओ.सी.डी. कम करने में सहायक हो सकते हैं |

प्रोबायोटिक्स

प्रोबायोटिक्स आवश्यक जीवाणु होते हैं जो हमारे डाईजेस्टिव सिस्टम में प्राकृतिक रूप से मौजूद होते हैं |

परन्तु हम अत्यधिक व्यस्तता के कारण नियमित रूप से संतुलित भोजन नहीं ले पाते हैं | इस कारण यह आवश्यक हो जाता है कि मार्केट्स में संयुक्त रूप से उपलब्ध प्रोबायोटिक और प्रीबायोटिक कैप्सूल्स डॉक्टर्स के निर्देशानुसार उचित डोज में लें ताकि हम स्वस्थ्य रह सकें |

प्रोबायोटिक्स के प्रकार

प्रोबायोटिक कई प्रकार के होते हैं जैसे लैक्टोबेसिलस एसिड़ोफिलस, लैक्टोबेसिलस कैसी, लैक्टोबेसिलस रैम्नोसस, लैक्टोबेसिलस स्पोरोजीन्स, लैक्टोबेसिलस फर्मेनटम, लैक्टोबेसिलस प्लेंटेरम, लैक्टोबेसिलस रयुटेरी, बायफिडोबैकटेरीयम बायफिडम, बायफिडोबैकटेरीयम बायफिडोबैकटेरीयम लोंगम, क्लोसट्रीडियम ब्यूटीरिकम,सेक्रोमायसिस बौलारडी, स्ट्रेपटोकोक्स थर्मोफिलस, स्ट्रेपटोकोक्स फेकालिस, लैक्टोबेसिलस और बायफिडोबैकटेरीयम पाचन तन्त्र में प्रचुर मात्रा में उपस्थित होते हैं और सबसे अधिक प्रोबायोटिक्स के रूप में इस्तेमाल किये जाते हैं |

लैक्टोबेसिलस एक प्रकार का बैक्टीरिया होता है जो फ्रेन्डली या मित्र बैक्टीरिया कहलाता है | ये हमारे शरीर के डायजेस्टीव, यूरीनरी और प्रजनन यानि जेनाइटल सिस्टम में मौजूद रहते हैं और इनके कारण कोई रोग नहीं होते हैं बल्कि शरीर के लिए ये लाभदायक होते हैं | लैक्टोबेसिलस की कई स्पीसीज या उपजातियां होती हैं | फार्मा कंपनियां अपने प्रोडक्ट्स की कम्पोजीशन में लैक्टोबेसिलस की अलग–अलग स्पीसीज को यूज करती हैं |

प्रोबायोटिक्स की क्रिया–विधि

प्रोबायोटिक्स के अलग–अलग स्ट्रेंस के अलग–अलग मैकेनिज्म या क्रिया–विधि हैं द्य जैसेरू

रोग पैदा करने वाले जीवाणुओं से प्रतिस्पर्धा (Competition with pathogens),
जीवाणुओं को खत्म करने वाले पदार्थों का निर्माण(Production of bactericidal substances),
प्रतिरक्षा–प्रतिक्रिया का विनियमन (Regulation of immune responses) और
आंतीय उपकला की समस्थिति(Intestinal epithelial homeostasis).

प्रोबायोटिक्स की कमी होने के कई लक्षण हो सकते हैं :

- पाचन सम्बंधित मुद्दे जैसे गैस, पेट का फूलना, डायरिया,कब्ज, सीने में जलन, अम्ल प्रतिवाह (Acid Reflux), आई.बी.एस.
- मानसिक मुद्दे जैसे स्वलीनता (Autism), अवसाद, ब्रेन फोग, ओ.सी.डी.
- विटामिन D, K, B7, B12, मैग्नेशियम की कमी,
- एंटीबायोटिक्स का अधिकतम इस्तेमाल,
- त्वचा सम्बन्धी शिकायतें जैसे सोरायसिस, मुहांसे, एक्जिमा
- स्व–प्रतिरक्षित रोग (Autoimmune disease) जैसे संधिशोथ (Rheumatoid Arthritis), आई. बी. डी. (Inflammatory Bowel Disease)

प्रीबायोटिक्स

प्रीबायोटिक्स प्रोबायोटिक्स का भोजन है | प्रीबायोटिक्स तब तक अवांछित रहते हैं जब तक कि वे बड़ी आंत तक नहीं पहुँच जाते हैं। ये शीघ्र नहीं पचने वाले भोजन के पाचन में भी सहायता करते हैं । इनकी प्रचुरता फायबर वाली सब्जियों में अधिक होती है | प्रीबायोटिक्स गैर–पचाने योग्य ओलिगोसेकराएड्स अवयव हैं | इसके सेवन से शरीर में कैल्शियम–स्तर में बढ़ोतरी होती है और मित्र बैक्टीरिया की संख्या में वृद्धि भी होती है । आंत के कार्य को सामान्य करने के साथ प्रतिरक्षा प्रणाली यानी इम्यून सिस्टम को भी मजबूत करता है | फ्रुक्टोओलिगोसेकराएड्स प्रीबायोटिक है |

GATMORE के प्रत्येक कैप्सूल में है :

बायफिडोबैक्टेरीयम बायफिडम 0.48 बिलियंस, लैक्टोबेसिलस एसिड़ोफिलस 0.48 बिलियंस, लैक्टोबेसिलस रैम्नोसस 0.48 बिलियंस, सेक्रोमायसिस बौलारडी 0.10 बिलियंस, स्ट्रेपटोकोक्स थर्मोफिलस 0.48 बिलियंस, फ्रक्टोओलिगोसेकराएड्स 300mg

गटमोर (प्रोबायोटिक्स + प्रीबायोटिक) के लाभ :

- शरीर में उपयोगी बैक्टीरिया के प्राकृतिक विकास के लिए
- पाचन को विनियमित या संतुलित रखना
- एन्टीबायोटिक्स के सेवन के बाद हो जाने वाले मित्र बैक्टीरिया की कमी को दूर कर उनकी संख्या में वृद्धि करना
- भोजन में स्थित कैल्शिंयम और मैग्नेशियम जैसे पोषक तत्वों के अवशोषण को बढाने में सहायक
- दूषित आहार द्वारा होने वाले रोगों से रक्षा
- दस्त से बचाव और इसकी गंभीरता को कम करना
- आँतों में उपस्थित लाभदायक और हानिकारक बैक्टीरिया की संख्या में संतुलन बनाना
- मानसिक स्वास्थ्य में सुधार
- वजन बढ़ने और मोटापा कम करने में सहायक
- प्रतिरक्षा–प्रणाली को संबल देना
- योनि ईस्ट संक्रमण दूर करने में लाभप्रद
- एलर्जी के लक्षणों की रोक–थाम
- लैक्टोज असहिष्णुता में कमी

गटमोर के कम्पीटिटर ब्रांड्स और उनकी कम्पनीयों के नाम:

गटराईट (एफ डी सी), बायफिलिन (सिप्ला) बायफिलेक (टेबलेट इंडिया), गट ओ. के. (मैनकाइंड मैगनेट), फ्लोरा एस.बी. (मैनकाइंड डिस्कवरी), टोटेलिस (शील्ड)

खुराक: चिकित्सक के परामर्शुनासार

पैक : **1 X 10's caps**

एम्–जेड और एम्–जेड डी.एस.आर.

MZED, MZED - DSR

पैक: 10x10's

एम्–जेड के प्रत्येक टैबलेट में है:
रेबेप्राजोल सोडियम 20mg

एम्–जेड डी.एस.आर के प्रत्येक कैप्स्यूल में है:
रेबेप्राजोल सोडियम 20mg
डोम्पेरीडॉन 30mg

पेट की पेरायटल कोशिकाओं की स्त्रावी सतह में एसिड बनने की प्रक्रिया के अंतिम चरण में गैस्ट्रिक H+k+ AT Pase एंजाइम शामिल है जिसे 'प्रोटोन पम्प' या 'एसिड पम्प' कहा जाता है। रेबेप्राजोल गैस्ट्रिक एसिड बनने की प्रक्रिया के अंतिम चरण प्रोटोन पम्प को अधिक एसिड बनाने से रोक देता है इसलिए रेबेप्राजोल को "प्रोटोन पम्प इन्हिबिटर" कहा जाता है।
डॉमपेरीडॉन मिचली और उल्टी की समस्या दूर करने के साथ आंत की गतिशीलता भी बढाता है।

इंगित: पाचनांत्र में सक्रिय अल्सर (Active duodenal ulcer), सक्रिय सौम्य गैस्ट्रिक अल्सर (Active benign gastric ulcer), जठर ग्रासनली प्रतिवाह रोग (Gastro Esophageal Reflux Disease or GRD), अम्लिकोद्‌गार (Heartburn), अपच (Dyspepsia), अत्यधिक एसिड का बनना (Hyperacidity), एसिडिटी के कारण मिचली या उल्टी। जोलिंगर एलीसन सीन्ड्रोम (Z ollinger-Ellison syndrome). जठर ग्रासनली प्रतिवाह रोग (Gastro Esophageal Reflux Disease or GERD)— इस स्थिति में एसिड का प्रवाह पेट से वापस ग्रासनली (Esophagus) में होने लगता है जिसके कारण सीने में जलन (Heartburn) की शिकायत होने लगती है और इसके कारण ग्रासनली क्षतिग्रस्त हो सकती है। गले और पेट को जोड़ने वाली नली को ग्रासनली (Esophagus) कहते हैं। रेबेप्राजोल GERD के लक्षणों को दूर करता है। जोलिंगर एलीसन सीन्ड्रोम (Z ollinger-Ellison syndrome)- इस रोग में पेट अत्यधिक अम्ल बनाने लगता है। रेबेप्राजोल पेट में बनने वाले अम्ल (Acid) की अधिक मात्रा को कम कर देता है। अल्सर (ulcer) ..पेट या आंत के अस्तर में अम्ल की अधिकता के कारण फोड़ा या घाव का बनना। पेट या आंत में अल्सर एच। पायलोरी नामक बैक्टीरिया के कारण भी हो सकता है इस स्थिति में चिकित्सक रोगी को रेबेप्राजोल के साथ दूसरी औषधियों को भी लेने की अनुशंसा कर सकते हैं।

खुराक:
GERD में : एम् जेड/एम्जेड डी.एस.आर 20gm टेबलेट या कैप्सूल प्रतिदिन 1 बार 4 सप्ताह तक/चिकित्सक के परामर्शुनासार
एच. पायलोरी संक्रमण : 20gm टेबलेट या कैप्सूल के साथ 1 कैप्सूल एमोक्सिसिलिन और 1 कैप्सूल क्लेरिथ्रोमायसीन प्रतिदिन 2 बार 1 सप्ताह तक/चिकित्सक के परामर्शुनासार
डयुओडिनल अल्सर : 20gm टेबलेट या कैप्सूल प्रतिदिन 1 बार/चिकित्सक के परामर्शुनासार
गैस्ट्रिक अल्सर : 20gm टेबलेट या कैप्स्यूल प्रतिदिन 1 बार 4 से 8 सप्ताह तक/चिकित्सक के परामर्शुनासार

एम्–जेड और एम्–जेड डी.एस.आर. के कम्पीटीटर ब्रांड्स और उनकी कम्पनीयों के नाम:

ओम्निसेक (सिप्ला), रेजो (डा.रेड्डीज) रेजोगार्ड (ईंडोको), रेप्राल (एल्डार), हेप्पी–डी (जर्मन रेमेडीज), रैबीडिक–डी (मार्क), रीड़ोक्सीड (मनीष हे.के.)

डेजोकिल

DAZOKIL

परजीवी (पैरासाइट्स) वह कीटाणु है जो व्यक्ति के भारीर में प्रवेश करके बाहर या भीतर ऊतकों या प्रवेश कर आंतरिक अंगों से जुड़ जाती है और सारे पोशक तत्वों को चूस लेती है। स्वच्छ पीने के पानी का अभाव, दूशित खाद्य प्रदार्थो का सेवन तथा शारीरिक सफाई पर ध्यान नहीं देना शारीरिक प्रतिरोधक क्षमता की कमी, कच्चे और अधपके भोजन ग्रहण करना, रोगी और कमजोर व्यक्ति, अधिक मच्छरों व मक्खियों का होना, बच्चों के मिट्टी के सम्पर्क में आने आदि के कारण पेट में परजीवी कृमि हो जाती है। ये कृमि सैकड़ों के संख्या में अंडे देते है जो मल के साथ बाहर निकल कर खाद्य पदार्थो, मिट्टी, सब्जियों, पानी को दूशित कर देते है और उनके सेवन से कृमि के अंडे मनुश्य की छोटी आंत में पहुँच जाते है। जहां उनसे लार्वा निकलते है और ये लार्वा कृमि में विकसित हो जाते है। कृमि एक बार में पूरी तरह निकल जाते है या मल में थोड़ा–थोड़ा करके निकलते है। इनके संक्रमण से पेट दर्द, कमजोरी, डायरिया, भूख न लगना, वजन कम होना, उल्टी, रक्त की कमी, कुपोशण जैसे विटामिन बी 12, आयरन, फैट और प्रोटीन की कमी हो जा सकती है। मलद्वार और योनि के आसपास खुजली, नींद न आना और पेट दर्द कृमि के संक्रमण के लक्षण है।

डेजोकिल के प्रत्येक चबाने वाले टैबलेट में है:

एलबेंडाजोल 400mg

आंत में पाए जाने वाले परजीवी कृमि कई प्रकार के होते है:

गोल कृमि (Round worm), पिन कृमि (Pin worm), व्हिप कृमि (whip worm) और टेप कृमि (Tape worm)

खुराकः (वयस्क): 400mg टेबलेट एकल डोज (Single dose) चिकित्सक के परामर्शुनासार।

(बच्चों–12 से 23 महिना के उम्र)–डेजोकिल 5ml एकल डोज (Single)

(बच्चो–24 से 36 महिना के उम्र)–डेजोकिल 10ml एकल डोज (Single)

(बच्चो–37 से 60 महिना के उम्र)– डेजोकिल टैबलेट 400mg एक टैबलेट एकल डोज (Single)

विशेष सावधानी– लिवर या किडनी के रोगियों में, गर्भ धारण करने योग्य उम्र के स्त्रीयों में माहवारी शुरू होने के दिन के एक सप्ताह पहले देना चाहिए।

निशिद्ध–गर्भावस्था में, स्तन–पान कराने वाली महिलाओं में और 1 साल से कम उम्र के बच्चों मैं

डेज़ोकिल के कॉम्पटिटिर ब्रांड और उनकी कम्पनियो के नाम

पैक– डेजोकिल के चबाने वाले टैबलेट 1x10

जेन्टील (जी.एस.के.) नीमोजोल (इप्का), ओल्बेंन (ईडीको) बेनडेक्स (सिप्ला), एक्सवर्म (रेवियन), वर्मिन–ए (कैडिला), वर्मपेल (एग्लोमेड)

मोरपाइम

Morpime

मोरपाइम सिरप के प्रत्येक 5ml में है:
पेप्सिन (1:3000) I.P. 7.5 mg
फंगल डायस्टेज (1:800) I.P. 18.75 mg

मोरपाइम सिरप एक डायजेस्टिव सप्लीमेंट है जिसमे फंगल डायस्टेज और पेप्सिन शामिल हैं ।

फंगल डायस्टेज एक प्रभावशाली एन्जाईम कोम्प्लेक्स है जो एस्परगिलस ओरिन्झा नामक फंगाई से विघटित कर बनाया जाता है। भोजन में स्थित प्रोटीन और कार्बोहायड्रेट के बड़े अणुओं को छोटे और सरल अणुओं में तोड़ कर पाचन में सहायता करता है। यह स्टार्च, वसा के भी पाचन में मदद करता है। फंगल डायस्टेज भोजन में स्थित स्टार्च को अवक्रमित (degrade) करने वाला एन्जाईम है। इसका उपयोग कार्बोहायड्रेट और स्टार्च के पाचन में एक प्रभावी सहायक के रूप में किया जाता है क्योंकि यह भोजन में स्थित कार्बोहायड्रेट और स्टार्च को पोलीसेकराएड्स और शुगर में बदल देता है।

पेप्सिन एक एन्जाईम है जिसका पेप्सिनोजेन पेट की चीफ कोशिकाओं से रिलीज होता है और भोजन में स्थित प्रोटीन को पेप्टाईड्स और एमिनो एसिड्स में अवक्रमित (degrade) कर देता है । पेप्सिन एक डायजेस्टीव प्रोटीएज है जो अम्लीय pH पर सक्रिय रहता है ।

इंगित (Indications) : मोरपाइम सिरप का उपयोग निम्न स्थितियों में किया जाता है :
अधोवायु (Flatulence)
अधिक प्रोटीन वाले भोज्य पदार्थ का न पचना
एसिडिटी
पेट की मरोड़ और एंठन
लिवर सम्बन्धी शिकायत
भूख की कमी (Anorexia)
अपच (Indigestion)
अजीर्ण (Dyspepsia)
अम्लीय बदहजमी (Acid indigestion)
खट्टी डकार (Erucation)
पेंक्रीएटिक अपर्याप्तता (Pancreatic Insufficiency)
विपरीत संकेत (Contraindication)– ऐसे व्यक्ति जो पेनक्रीयाज की सूजन से पीड़ित हों या उन्हें सिंथेटिक एन्जाएम्स से एलर्जी हो, उन्हें यह सिरप नहीं पीना चाहिए ।

खुराक: वयस्क – 5ml उस भोजन के बाद / चिकित्सक के परामर्शानुसार
बच्चे – 2.5ml भोजन के बाद / चिकित्सक के परामर्शानुसार
पैक: 200ml

मोरपाइम के कम्पीटिटर ब्रांड्स और उनकी कम्पनीयों के नाम:

एरिस्टोजाइम (एरिस्टो), एग्लोजाइम (एग्लोमेड), यूनीजाईम (यूनीकेम), विटाजाइम (हेक्स्ट), ल्यूपिजाइन (ल्यूपिन)

Liver Health

सायोना सिरप

Cyona Syrup

इसके प्रत्येक 5ml में है:

सायप्रोहेप्टाडिन HcL	2mg
ट्राईकोलिन साइट्रेट	275mg

सायप्रोहेप्टाडिन हिस्टामिन और सीरोटोनिन के प्रभाव को रोकता है। यह एंटीएलर्जिक, भूख बढाने वाला और शरीर का वजन बढाने के लिए उत्तम औषधि है इसका उपयोग लिवर के सिरोसिस और फैटी समावेश में इसके शरीर में फैट के जमा होने की प्रक्रिया को कम करने के कारण किया जाता है। सायप्रोहेप्टाडिन से वैसे तो लिवर के ऊपर कोई दुश्प्रभाव नहीं है पर इसके लिवर में चयापचय होने के कारण लिवर को सुरक्षित रखने के लिए ट्राईकॉलिन साईट्रेट मिलाया गया है क्योंकि यह शरीर में फैट के जमा होने की प्रक्रिया को कम कर देता है और लिवर को स्वस्थ्य रखता है।

इंगितः भूख की कमी, एलर्जी

खुराक (वयस्क): 1 – 2 चम्मच एक या दो बार / चिकित्सक के परामर्शुनासार

(**बच्चे** 7 – 14 वर्ष) : 1 – 2 चाय चम्मच एक या दो बार / चिकित्सक के परामर्शुनासार

सायोना सिरप
के कम्पीटीटर ब्रांड्स और उनकी कम्पनीयों के नामः

एप्जॉय (आर्किड), सायडाईंन (सिप्ला), सिप–एल (सिप्ला), सायप्राईड (सीफाम), सायपोन (जेनो)

मोरोसिल

MOROSIL

सिलिमैरिन 70mg, लेसिथिन 250mg, विटामिन बी-काम्प्लेक्स- प्रति कैप्सूल में

सिलिमैरिन 35mg, लेसिथिन 125mg, विटामिन बी-काम्प्लेक्स- प्रति 5ml सस्पेन्सन में

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार हर साल लाखों लोग हेपेटाइटिस से संक्रमित होते हैं और कई लाख लोग दुनिया भर में इस बीमारी के चलते अपनी जान गवांते हैं। भारत में मृत्यु होने के 10 शीर्ष कारणों में से लिवर का रोग भी एक है। ऐसा अनुमान लगाया गया है कि देश में हर साल लगभग दो लाख लोग लिवर की बीमारियों से दम तोड़ देते हैं।

100 से भी अधिक प्रकार के लिवर की बीमारियाँ मनुष्य को शैशव–काल, यौवनावस्था या वृद्धावस्था – किसी भी अवस्था में प्रभावित कर सकती हैं। लिवर की तीन सबसे घातक बीमारियां हैं :

चर्बीदार लिवर, हेपेटाइटिस और सिरोसिस। इनके अलावा पेट में पानी भर जाना, कैंसर जैसे रोग और यहाँ तक कि मृत्यु का रूप भी अख्तियार कर सकती हैं।

लिवर एक शक्तिशाली detoxification केंद्र है। कई रसायनों, शराब, प्रदुषण, दवाइयों और अन्य विषाक्त पदार्थों के विषैले प्रभाव को दूर करता है.लिवर की कोशिकाएँ वसा तथा विटामिन्स का संश्लेषण एवं संचय का कार्य करती है. लिवर के खराब होने के कई कारण हैं जैसे शराब का अधिक सेवन, अधिक धूम्रपान, खट्टा ज्यादा खाना, अधिक नमक सेवन, विषाक्तता (किसी दवा, केमिकल या वायरस के कारण), किसी लंबी बीमारी के कारण, मोटापा और डॉयबिटीज, कुपोषण, पेस्टीसाईड्स ओर रसायनयुक्त खाद्य, नशीली दवाएं और यहां तक एचआईवी, अत्यधिक तनाव और चिंता , केमोथेरेपी, इन्फेक्शन्स जैसे टी. बी., वाइरल हैपेटायटीस A, B और C आदि।

अल्कोहल-

यह कम कर देता है शरीर में मौजूद विटामिन्स को, जिसके कारण और अल्कोहल के विषैले तत्वों में परिवर्तित होने के कारण भी फ्री रेडिकल्स की संख्या बहुत ज्यादा हो जाती है. फ्री रेडिकल्स, विकिरण के विषाक्त प्रभाव की तरह असर करती है जिससे व्यक्ति कमजोर, बीमार और शराब के प्रभाव में छाया (HANGOVER) रहता है. जैसे अंगों का कांपना, दृष्टि – दोष, सिर में भारीपन, स्फूर्तिहीनता, काम–काज में मन न लगना, आलस्य, जी मिचलाना, उल्टी होना, डायरिया आदि... अल्कोहल पीने वालों में विटामिन बी 3 की सबसे ज्यादा कमी हो जाती है. विटामिन बी 2 (Riboflavin) की कमी से लिवर की समस्याएँ पैदा हो जाती हैं. अधिक शराब के सेवन से विटामिन बी 6, विटामिन बी 12 और SGOT. SGPT कम हो जाती है. विटामिन बी कम्प्लेक्स लिवर के आवश्यक कार्य–कलापों में महत्वपूर्ण सहायक है,लिवर में प्रोटीन और कार्बोहाइड्रेट के चयापचय में पाचक–रस की तरह प्रभाव करता है,लिवर की क्षतिग्रस्त कोशिकाओं को सुधारने की प्रक्रिया को तेज करता है, लिवर द्वारा विषाक्त तत्वों के दुष्प्रभाव को खत्म करने की प्रक्रिया को बढाता है और लिवर में हुई विटामिन बी की कमी को पूरा करता है।

हैपेटायटीस A, B और C-

हेपेटाइटिस की दो अवस्थाएं होती हैं, पहली, प्रारंभिक यानि की एक्यूट और दूसरी पुरानी अर्थात क्रॉनिक। हेपेटाइटिस की प्रारंभिक अवस्था शुरू के तीन महीनों तक रहती है। लेकिन यदि छः महीनों तक इसका इलाज नहीं हो तो यह क्रॉनिक हेपेटाइटिस की रूप ले लेती है। शुरुआती दौर में यदि हेपेटाइटिस के साथ पीलिया हो जाए और इसका उपचार ठीक से न हो तो यह क्रॉनिक हेपेटाइटिस बी या सी का रूप ले लेती है। और यदि इसके बाद भी इसका उचित इलाज न हो तो यह लिवर सिरोसिस में परिवर्तित हो जाती है जिसके कारण पूरा लिवर खराब हो जाता है। इसके कारण लिवर का कैंसर भी हो सकता है।

हेपेटाइटिस ए- हेपेटाइटिस ए सबसे कम गंभीर है। यह संक्रामक रोग है यानी यह रोगी के संपर्क में आने वाले स्वस्थ व्यक्ति को भी अपना शिकार बना सकती है। यह बीमारी दूषित खाने व जल के सेवन से होती है।इसका वायरस दूषित पानी से और संक्रमित सुई के इस्तेमाल से सबसे ज्यादा फैलता है।

हेपाटाइटिस बी- हेपाटाइटिस बी संक्रमित रक्त, शरीर के रक्त युक्त तरल पदार्थ के संपर्क में आने से, असुरक्षित यौन संपर्क, रक्त चढ़ाने, प्रदूषित सुइयों और सिरिंजों का दुबारा उपयोग से फैलता है।

हेपाटाइटिस सी- हेपाटाइटिस सी के स्त्रोत हैं : रक्त के जरिए, प्रयोग किये सुईयों के जरिए, इंजेक्शन द्वारा ड्रग लेना और कई कारणों से हेपेटाइटिस से संक्रमित किसी व्यक्ति के रक्त के संपर्क में आना, टैटू गुदवाना, किसी संक्रमित व्यक्ति का टूथब्रश और रेजर इस्तेमाल करना और असुरक्षित यौन संपर्क. इसका संक्रमण अक्सर स्पर्शोन्मुख होता है लेकिन एक बार होने पर दीर्घकालिक संक्रमण तेजी से लिवर को नुकसान (फाइब्रोसिस) पहुंचाने लगता है।

सिलिमैरिन-

इसमें मिल्क–थिस्ल के सारे औषधीय गुण समाहित हैं। यह एक अत्यंत सक्रिय flavonoid complex है। इसका उपयोग सहायक उपचार के रूप में सिरोसिस, हेपेटायटीस और अल्कोहल या दूसरे विषैले तत्वों के कारण लिवर में वसा (फैट) के जमा होने के कारण हुए लिवर के रोगों में चिकित्सक के परामर्शुनासार किया जाता है. यह एक प्रभावकारी एन्टीओक्सीडेंट, कैंसर को रोकने या उसके विरुद्ध कार्य करने और विशेष कर लिवर को सुरक्षा प्रदान करने के लिए जाना जाता है।

लेसिथिन-

रेशेदार तन्तुमय कोशिकाएं (fibrous tissue) जिसके कारण सिरोसिस होती है, को लिवर में तोड़ने की प्रक्रिया को तेज करता है। अल्कोहल के कारण लिवर में हुए क्षति को फिर से दुरुस्त करने में सहायक है। कोशिकाओं की झिल्ली को कड़ा नहीं होने देता है जिससे वे अपना कार्य उचित रूप से सम्पादित करती रहती हैं। अल्कोहल या अन्य कारण से लिवर में हुए क्षति को फिर से दुरुस्त करने में सहायक है। लिवर के उचित क्रिया–कलाप के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

इंगित- सहायक उपचार के तौर पर :

ऐसी स्थितियां जिनमे लिवर–कोशिकाएं क्षतिग्रस्त हो जाती हैं जैसेः लम्बे समय से स्थाई और सक्रिय हेपेटायटीस, दवाइयों के द्वारा हुई हेपेटायटीस, अल्कोहलिक लिवर रोग, लिवर में fatty change, स्व–प्रतिरक्षित (Autoimmune) हेपेटायटीस, कमजोर लिवर के कारण हुए अपच, भूख की कमी, वजन का कम होने जैसी स्थिति में।

खुराकः वयस्क- 2 चाय का चम्मच प्रतिदिन 2 से 3 बार / चिकित्सक के परामर्शुनासार
या 1 –2 कैप्सूल प्रतिदिन 2 बार / चिकित्सक के परामर्शुनासार

मोरोसिल के कम्पीटीटर ब्रांड्स

सिलिबोंन (माइक्रो) एलोलिव (बेनेट), ईलिव (रेवियन), हेपाविट (लाइफ विजन), हिगाडो–एल (सेल्युड केअर), लिथिन–एस. (ब्राउन), हीपासिल (केमो), लीमारिन (सीरम), लीवोसिल बी.(सेंच्युर), लिवरिल–बी.(मेअर ओरगेनिक)

Others
CPR

मिनोस्पास

MINOSPAS

मिनोस्पास के प्रत्येक टेबलेट में है :
ड्रोटावरिन हायड्रोक्लोराईड (Drotaverine hydrochloride) 80mg और
मेफेनेमिक एसिड (Mefenamic acid) 250mg

मनुष्य के शरीर में 40 प्रतिशत भाग पेशियों (muscles) का होता है। शरीर में तीन प्रकार की पेशियाँ पाई जाती है :
(1) रेखांकित (skeletal) (2) अरेखांकित (smooth) और (3) ह्रदय पेशी (cardiac muscles)

कार्डियक मसल्स हार्ट की दीवारों पर पाई जाती हैं . रेखांकित या कंकालीय मांसपेशियां जैसे पिंडली, पीठ, जांघ, या हाथ में होती हैं. अरेखांकित या स्मूथ मसल्स स्वतरू ही संकुचित होती और फैलती हैं. सारी पाचनप्रणाली, ग्रसनिका से लेकर गुदा तक में इन पेशियों का प्रधान भाग रहता है। प्रत्येक नलिका रक्तवाहिनियों तथा आशयों की भित्तियाँ प्रधानतरू इन्हीं पेशियों की बनी होती है। अरेखांकित या स्मूथ मसल्स बॉडी के ऑर्गन्स जैसे स्टमक, आहार नाल ,यूटेरस और ब्लैडर में पाई जाती है। स्मूथ मसल्स की ऐंठन के कारण तेज दर्द हो सकते हैं | मूत्रमार्ग की ऐंठन अधिकतर किडनी में स्टोन की उपस्थिति होने के कारण होती है जिसके कारण तेज दर्द होती हैं |
एंटीस्पासमोडिक्स आँतों या स्मूथ मसल्स की ऐठन में आँतों को आराम पहुँचाने में मदद करती हैं जिससे दर्द में राहत मिलती है | ड्रोटावरिन एक एंटीस्पाज्मोडिक दवा है जो नरम मांसपेशियों में मांसपेशी स्पाज्म से राहत दिलाती है। ड्रोटावरिन का उपयोग पेट में दर्द, इर्रिटेबल बोवेल सिंड्रोम, मासिक – धर्म में दर्द, लेवर के समय सरवाइकल स्पाज्म, छाती में दर्द, गालस्टोन दर्द, गुर्दे के दर्द आदि में किया जाता है.
मेफेनामिक एसिड, नॉन–स्टेरॉयडल एंटी–इन्फ्लामेटरी ड्रग्स (एनएसएआईडी) है. मेफेनेमिक एसिड का उपयोग मायल्जिया, पीरिअड्स के दौरान दर्द, आपरेशन के दौरान होने वाले दर्द, आदि में किया जाता है.

उपयोग :
Spasmodic dysmenorrhoea,(पीडादायक पीरिअड्स)
Colic pain including ureteric, biliary and intestinal colic (मूत्रवाहिनी, आंत–सम्बन्धी ,पित्त सम्बंधी पेट–दर्द).

सामान्य खुराक (वयसक) – चिकित्सक के परामर्शुनासार

मिनोस्पास के कम्पीटिटर ब्रांड्स :

बेरालगेन . डी . एस (सैनोफी – एवेन्टिस) डोटारिन . एम . एफ (एल्डर)
ड्रोटोकाइंड . एम (डिस्कवरी मैनकाइंड) ड्रोट . एम (मेप्रा)
ड्रोफेम (एफ . डी . सी)

एमकॉट-एन

Mcot-N Cream

एम्कोट.एन के 15gm टयूब में प्रत्येक ग्राम में है:

क्लोट्राइमेजोल– 1% w/w
बेक्लोमीथासोंन– 0.025% w/w
निओमायसिन – 0.5% w/w

स्किन इंफेक्शन (Skin Fungal Infection) कई तरह के फफूंद या कवक (Fungi) के कारण से होता है जिसमे त्वचा पर सफेद पपड़ी बन जाती है जिसमे खुजली होने लगती है। इसमें फंगल इंफेक्शन के साथ–साथ बैक्टीरिअल इंफेक्शन भी हो सकता है। फंगल संक्रमणों के उदाहरण हैं जैसे : दाद (Ringworm), डायपर रैश (Diaper rash), कैंडिडिएसिस (Candidiasis), एथलीट फूट, एक्जिमा, धोबी इच (Dhobi itch), खुजली (Itching, Irritation), योनि में जलन, सफेद पानी आना (White discharge), सिर में फुंसियां, नितम्बों, गुप्तांगों पर चकत्ते और जलन, नाखून संक्रमण ;ज्पदमं नदहनपनउद्ध आदि।

- **एथलीट फुट** (Tenia pedis)- यह फंगल इंफेक्शन पैर की अँगुलियों के मध्य हिस्से में होता है। इसमें त्वचा फट जाती है, खुजली और जलन होती है, फफोले भी हो सकते हैं।
- **दाद या रिंगवर्म** (Ringworm)- जननांगों के आस-पास जहां पर अधिक पसीने आते हैं या कपड़े रगड़ खाते हैं दाद के होने की संभावना अधिक होती है। इस इंफेक्शन में प्रचंड खुजली, जलन के साथ छोट–छोटे दानें हो जाते हैं।
- **एक्जीमा**- यह शरीर के किसी भी स्थान की त्वचा में हो सकता है। रोग की जगह पर लाली आ जाती है, छोटे–छोटे दाने हो जाते हैं और खुजली भी होती है। यह बहुत ही ज्यादा कष्टकारी होता है।
- **शिश्नमुण्डच्छदशोथ** (Balanoposthits)– शिश्नमुण्डशोथ होने के मुख्य कारण स्वच्छता की कमी और जलन है। इस स्थिति में लिंग के मुख या सामने की त्वचा पर लाली, सूजन और दर्द होता है, लिंग के सामने की त्वचा पर डिस्चार्ज हो सकता है, लिंग पर दाने आ जाते हैं और लिंग के मुख या सामने की त्वचा पर खुजली होने लगती है।
- **एनल प्रुरायटस** (Anal pruritus)- गुदा में प्रखर खाज।
- **इन्टरट्रायगो** (Intertrigo)- त्वचा के एक भाग का त्वचा के किसी दुसरे भाग से रगड़ खाने से हुए सूजन या इनफ्लामेशन त्वचा पर गहरी लाइने दिखाई दे सकती हैं।

- **सपूयचर्मस्फोट या ईमपीटीगो** (Impetigo)- स्ट्रेप्टोकोक्क्स (Streptococcus) बैक्टीरिया की वजह से होने वाला एक संक्रामक रोग हैद्य जब यह संक्रमण त्वचा में होता है तो इसे सपूयचर्मस्फोट (impetigo) कहते हैं। इसके लक्षणों में बुखार और शरीर पर दाने निकल आते हैं। त्वचा पर गहरी लाइने दिखाई दे सकती हैं।

एमकॉट-एन में है :

- बेक्लोमीथासोन ईंफ्लामेशन या सूजन को दूर करने वाला स्टेरोयड है।
- क्लोट्राइमेजोल सिन्थेटिक एनटीफंगल एजेंट है जो कवक संक्रमण ;थ्नदहंस पदमिबजपवदद्ध के उपचार में बहुत लाभदायक है। यह फंगल और यीस्ट को बढ़ने से और उसके उपचार में प्रभावी है।
- नीओमाय्सिन एक टोपिक्ल Topical (स्थानीय या त्वचा के किसी विशेष स्थान पर) एन्टीबायोटिक है जो बैक्टीरिअल संक्रमण को दूर करता है।

उपयोग विधि :

दो से चार सप्ताह तक प्रतिदिन 2 बार त्वचा के ऊपर प्रभावित स्थान पर लगा कर हल्के से मालिश करें / चिकित्सक के परामर्शुनासार।

इंगित :

एक्जिमा, दाद या रिंगवर्म, एथलीट फुट, नितम्बों, गुप्तांगों पर चकत्ते और जलन, नाखून संक्रमण (Tinea unguium) शिश्नमुण्डच्छदशोथ (Balanoposthits), गुदा/योनि में खुजली (Anal/Vulval pruritus), इन्टरट्रायगो (Intertrigo), इम्पीटीगो (Impetigo).

वर्जित :

एम्कोट–एन क्रीम का उपयोग आँख, मुंह, कान, नाक और योनि में नहीं करना चाहिए।

एमकॉट-एन के कम्पीटीटर ब्रांड्स :

क्वाड्रीडर्म (फुलफोर्ड), ओंडर्म (ओब्सर्ज), बेसटोपिक–एन (सिस्टोपिक), मोडभेट–3 ;जीण्एसण्केण्द्ध, क्लोबेन–जी ;ईंडोकोद्ध, क्यूटीगार्ड ;एग्लोमेडद्ध, एनण्सीण्डर्म ;कीण्फार्माद्ध, ईचगार्ड ;रेकिट बैन्क्सरद्ध।

मोर्बोलिन

Morbolin

मोर्बोलिन 25 – प्रत्येक एम्पुल में 25mg/ml नेंड्रोलोंन डेकानोएट का 1ml है।

मोर्बोलिन 50 – प्रत्येक एम्पुल में 50mg/ml नेंड्रोलोंन डेकानोएट का 1ml है।

यह एनाबोलिक स्टेरोयड है जिसका उपयोग किडनी के रोग के कारण हुए एनीमिया दूर करने और लाल रक्त कण बढ़ाने के लिए किया जाता है। टेस्टोंस्टेरोन के बाद निश्चित रूप से नेंड्रोलोंन डेकानोएट दूसरा अति उत्तम स्टेरोयड है।

इसका उपयोग भूख बढाने, वजन बढाने, हड्डियों के घनत्व बढाने, मांस पेशियों की वृद्धि के लिए, जोड़ों की मामूली समस्याओं को दूर करने और पुरुषों के लैंगिक विशेषताओं को विकसित करने के लिए भी किया जाता है।

बिना चिकित्सक के सलाह के इसका उपयोग नहीं करना चाहिए।

खुराकः

(वयस्क स्त्री)– 50 to 100mg प्रति सप्ताह / चिकित्सक के परामर्शुनासार

(वयस्क पुरूश)– 100 to 200mg प्रति सप्ताह / चिकित्सक के परामर्शुनासार

(बच्चे 2 से 13 साल उम्र) औसत डोजः 25 to 50mg प्रत्येक तीसरे या चौथे सप्ताह में / चिकित्सक के परामर्शुनासार

इंजेक्शन केवल I.M (Deep Intra Muscular)–कुल्हे में

वर्जित : गर्भावस्था, स्तन–पान कराने वाली महिलाओं में, ब्रेस्ट केंसर, लिवर या किडनी के रोगियों

मोर्बोलिन के कम्पीटीटर ब्रांड्स और उनकी कम्पनीयों के नामः

डेकान्युरोबोल (केडिला–एच), मेटप (ओब्सर्ज), डेकाडरोबोलिन (इन्फार)

मोरड्रील एक्सपेक्टोरेंट

Mordryl Expectorant

मोरड्रील एक्सपेक्टोरेंट के प्रत्येक 5उस में हैं:

ब्रोमहेक्सीन	4mg
टरब्युटालीन सल्फेट	1.25mg
गुईफेनासिंन	50mg
मेंथोल	1mg

गले में कफ से बहुत परेशानी का एहसास होता है। यह एक आम समस्या है जिसके अंतर्गत कभी कभी गले में खराश, संकुचन तथा छाती में दर्द हो सकता है। कफ तब होता है जब गला में हवा आने जाने वाली ऊपरी नलियां जाम हो जाती हैं। खांसी के कई कारण हो सकते हैं जैसे खांसी, सर्दी, फ्लू, वायरल संक्रमण, धूम्रपान, टी.बी.की बीमारी, दम्मा, ऊपरी श्वसन संक्रमण आदि। मोरड्रील एक्स्पेकटोरेंट द्वारा कफ की समस्या को दूर किया जा सकता है।

ब्रोम्हेक्सीन :

कफ थोड़ा गाढ़ा और चिपचिपा होता है। बलगम वाली खांसी में म्यूकोलायटिक जैसे, ब्रोम्हेक्सिन (Bromhexine) वाली कफ सिरप लिया जाता है। ब्रोम्हेक्सिन कफ के गाढ़ापन को कम कर पतला कर देता है ताकि कफ आसानी से बाहर निकल सके।

टरब्युटालीन सल्फेट :

साँस लेने वाली नली के भीतरी स्तर के मांस पेशियों में संकुचन होने की अवस्था को ब्रोंकोस्पाज्म कहते हैं। इसके कारण साँस लेने वाली नली संकड़ी या संकुचित हो जाती है और उसमे मौजूद रोम (Cilia) का ह्रास होने लगता है। फलस्वरूप, नली में मौजूद म्यूकस बाहर नहीं निकल पाते हैं, वहीं जमा रह जाते हैं और हवा के आवागमन में बाधा आ जाती है।

टरब्युटालीन सल्फेट बीटा–2 एगोनिस्ट समूह की दवा है। यह साँस लेने वाली नली के भीतरी स्तर के मांस पेशियों को शिथिल कर देता है जिससे नली संकुचित नहीं रहकर चौड़ी हो जाती है और साँस के द्वारा हवा के आवागमन में कठिनाई नही होती है। इसके अतिरिक्त यह रोम (Cilia) में द्वारा म्यूकस को भी हटाने में भी सहायता कर श्वांस–नली को साफ करता है, श्वांस–नली में आये सूजन को दूर करता है और साँसों की घरघराहट को रोकने में भी सहायक है।

गुईफेनासिंन :

कफ (Mucus) के गाढापन को कम करता है और इसे बाहर निकालने की प्रक्रिया में तेजी लाता है। ब्रोंकस की स्त्रावी ग्रंथियों में उपस्थित भेगस नर्व्स के अंतिम भागों के साथ–साथ मस्तिष्क में मौजूद केन्द्रों को भी प्रेरित या उद्दीप्त कर श्वास प्रश्वास सम्बन्धी द्रव प्रवाह (Respiratory fluid flow) को भी बढा देता है। इस प्रकार गुईफेनासिंन एक एक्सपेक्टोरेंट है जो नाक, गले और फेफड़ों में जमा म्यूकस को पतला या ढीला कर देता है ताकि कफ बनाने वाली म्यूकस का आसानी से निकास हो सके।

मेंथोल :

मेंथोल के उपयोग से खांसी और गले की खराश से राहत मिलती है। इसका कूलिंग इफेक्ट गले में ठंढक पहुंचाता है।

इंगित :

उत्पादी और अनुत्पादी कफ (Productive and Non Productive Cough).

(Productive cough को दबाया नहीं जाता है क्योंकि इसमें म्यूकस / कफ बाहर निकल जाता है। सर्दी, न्युमोनिया, टी.बी., ब्रोंकायटिस, सायनुसायटिस, धुम्रपान आदि के कारण Productive cough होता है। Non Productive Cough सूखा होता है और इसके कारण हो सकते हैं सर्दी, एलर्जी, दमा, ब्रोनकोस्पास्म, उच्च रक्त चाप में लेने वाली दवा जैसे ACE Inhibitors का उपयोग आदि)

खुराक :

(वयस्क) : 10 ml प्रतिदिन 2–3 बार /चिकित्सक के परामर्शुनासार
(बच्चे 2–6 वर्ष) : 5ml प्रतिदिन 2–3 बार / चिकित्सक के परामर्शुनासार

पैक : 100 ml

मोरड्रील एक्सपेक्टोरेंट के कम्पीटिटर ब्रांड्स :

एस्कोड़ेक्स प्लस (मीलिअस–ग्लेनमार्क), एक्सालिन (सिप्ला), ब्रोंकोसोल्भिन (इप्का), ब्रो–जीड़ेक्स (वोकहार्ड), डीलीटस–बी एक्स (निकोलस).

मोंल्युकास्ट-एल

MOLUKAST - L

मोल्युकास्ट–एल के प्रत्येक टैबलेट में निम्न सक्रिय अवयव निहित हैं :

- लिवोसेटिरिजिन (Levocetirizine) 5 mg
- मोंटेल्युकास्ट (Montelukast) 10 mg

मोल्युकास्ट–एल सिरप के प्रत्येक 5ml में निम्न सक्रिय अवयव निहित हैं :

- लिवोसेटिरिजिन (Levocetirizine) 2.5mg
- मोंटेल्युकास्ट (Montelukast) 4mg

मोंटेल्युकास्ट (Monteleukast) ल्यूकोट्रियन रिसेप्टर एंटागोनिस्ट है जो मौसमी एलर्जी या उसके कारण हुए दमा के लक्षणों से राहत देती है। लिवोसेट्रिजिन थर्ड जेनरेशन एंटीहिस्टामाइन है, जो कि मौसमी एलर्जी और एलर्जिक रायनायटिस के साथ जुड़े लक्षणों से राहत देती है।

इंगित :

- नाक बहना
- आँख में खुजली या पानी
- छींकना
- दमा
- सर्दी और फ्लू के लक्षणों को कम करने के लिए
- धूल या पालतू जानवर से एलर्जी
- एलर्जी राइनाइटिस
- इडीओपैथिक अर्टिकेरिआ (Idiopathic Urticaria)

खुराक : चिकित्सक के परामर्शुनासार

पैक : 10 x 10's Tab. & 30ml Syrup

मलूकास्ट - एल के कम्पीटिटर ब्रांड्स :

लेरजिन – एम (गल्फा), मोन्टीना – एल (अरिस्टो),
लिवोक्त – एम (हेटरों), लोवोटेक (सीगल), सोलिटेयर (ब्लू कोस)

आईटो

Eyetto Herbal Eye Drops

पुराने समय में लोगों के आंखों की रोशनी केवल बढ़ती उम्र में कम होती थी लेकिन लाइफस्टाइल बदलने के कारण अब बच्चों की आंखों की रोशनी भी कम होने लगी है । दिन भर लगातार कंप्यूटर और लैपटॉप पर समय बिताने के कारण भी आंखो को काफी नुकसान पहुंचता है । इस नुकसान की पूर्ति करने के लिए आहार और आंखों के लिए जरूरी चीजों पर ध्यान देना चाहिए । आंखों को स्वस्थ रखने के लिए कई प्रकार के एंटीऑक्सिडेंट्स की आवश्यकता है – ल्यूटिन, विटामिन A, C, E, बीटा कैरोटीन, ओमेगा – 3 फैटी एसिड, जस्ता, सेलेनियम, जिंक।

Eyetto Eye Drops में निहित अवयव :

काली मिर्च (Piper nigrum – 5% w/v in 10ml), मुलैठी या यस्तिमधु (Glycerriza glabra&10%w/v), पुनर्नवा (Boehravia diffusa 10%W/V), भृंगराज (Eclipta alba Husk 10% W/V), नीम (Azadirachta indica 10%w/v), हरद या हरितकी (Terminalia chebula 10%w/v), विभितकी या बहेड़ा (Terminalia bellerica 5%w/v), आमालाकि (Emblica officinalis 10% w/v), तुलसी (Ocimum sanctum 5% w/v), चन्दन (Santalum album 5% w/v), नीम्बू (Lemon acidum 2% w/v), फिटकिरी, सुहागा या टंकण भस्म (Borax (Boric acid) 2% w/v), शहद (Honey 3% w/v)

आईटो आई ड्राप के लाभ

1. नेत्र विकारो को दूर करने में लाभप्रद
2. जीवाणु संक्रमण के विरुद्ध कार्य।
3. कोर्निया स्वस्थ रखने में सहायक।
4. इसके प्रयोग से मोतियाबिंद विकसित होने की क्षीण सम्भावना।
5. दृष्टि स्पष्ट रखने में लाभप्रद।

आईटो के कम्पीटीटर ब्रांड्स :

ज्योति (चरक), ओफ्थाकेयर (हिमालया), दृष्टि (पतंजलि), मंत्रा (दिविसा), आईटोन (डेज मेडिकल्स), कम्फर्ट (स्पेस ऑर्गैनिक्स)

6. नेत्र पर पड़ने वाले अधिक दबाव को कम करने में उपयोगी।
7. कोशिकाओं के जीर्णोद्धार , उनकी बनावट बनाए रखने और उन्हें स्वस्थ रखने में लाभदायक।
8. आँखों की थकान और दबाव को दूर कर ताजगी प्रदान करना।
9. आँखों को विषैले तत्वों से मुक्त रखना।
10. आँखों के पोषण के लिए इसके अवयवो में निहित आवश्यक प्रोटीन , एमिनो एसिड्स , एल्केलॉयड्स , आयरन , कैल्शियम , विटामिन ए, सी और अनेक एंटीऑक्सिडेंट्स से परिपूर्ण।

इंगित : आँखों की लाली ,आंख आना (कंजंक्टिवाइटिस), आँखों में पीड़ा, जलन , खुजली , पानी गिरना , शुष्क आंखे , जीवाणु संक्रमण।

खुराक : चिकित्सक के परामर्शुनासार

पैक : 10 ml

आईटो के कम्पीटीटर ब्रांड्स :

ज्योति (चरक), ओफ्थाकेयर (हिमालया), दृष्टि (पतंजलि), मंत्रा (दिविसा), आईटोन (डेज मेडिकल्स), कम्फर्ट (स्पेस ऑर्गेनिक्स)

डेनटोसिल डेन्टल जेल

DENTOSIL DENTAL GEL

(फ्रेश मिन्ट)

इसमें निहित हैं : पोटाशियम नाइट्रेट और सोडियम मोनोफ्ल्युरो फोस्फेट. यह औषधीय झाग बनाने वाला डेन्टल जेल है. इसका नियमित प्रयोग दांतों को मजबूती प्रदान करने के साथ–साथ संवेदनशीलता (Sensitivity) के कारण होने वाली असुविधा, बेचैनी और दर्द से भी राहत देता है. इसमें स्थित शीतलता प्रदान करने वाले क्रिस्टल्स भी हैं जिसके कारण इसके इस्तेमाल करते समय मुंह के अंदर ठंढी ताजगी का भी एहसास होता है.

दांतों और इनकी जड़ों को मजबूत और सुरक्षित रखने के लिए इनके उपर की संरोधक परत (Enamel) की परत और मसूड़े महत्वपूर्ण होते हैं. जब मसूड़ों की कमजोरी के साथ एनामेल की परतें भी पतली हो जाती हैं तो किसी प्रकार की ठंढी, गर्म, मीठी या अति अम्लीय खाद्य पदार्थों के खाने पर दांत संवेदनशील (Sensitive) हो जाते हैं और दर्द भी होने लगता है. पोटाशियम नाइट्रेट दांतों की सेंसिटिविटी दूर करने के लिए सेंसिटिविटी टूथपेस्ट का एक सक्रिय और प्रमुख अवयव होता है जो संरोधक परत (Enamel) की सतह से रिसती हुई भीतर नर्व्स तक पहुँच जाती है और उन्हें दर्द के संकेत को मष्तिष्क तक भेजने में रुकावट डालती है जिसके कारण दर्द की अनुभूति कम होने लगती है. डेन्टोसिल डेन्टल जेल में पोटाशियम नाइट्रेट 5% है जो W-H-O द्वारा अधिकतम निर्धारित मात्रा है.इस टूथ–पेस्ट में निहित फ्लोराईड दांतों के संरोधक परत (Enamel) को मजबूत करने के साथ हो कैविटीज के रिस्क को भी कम करता है.
इसके लगातार नियमित प्रयोग से दांतों के सडन से बचाव, कैविटीज के रिस्क की कमी, दांतों और उनकी एनामेल की मजबूती और दांतों में चमक आयेगी.

- दिन भर में 2 बार नियमित रूप से टूथ–पेस्ट के साथ 2 मिनट तक ब्रश करना चाहिए.
- इसे नहीं निगलना चाहिए.
- अधिक अम्ल वाले भोजन एवं पेय पदार्थों से परहेज करें.
- एक अंतराल में दांतों की उचित सफाई करने के लिए फ्लॉसिंग करना बहुत जरूरी होता है। यह मसूड़ों और दांतों की बीमारी पैदा करने वाले प्लॉफक को हटाबता है।
- 7 वर्ष से नीचे की उम्र के बच्चों के लिए उपयुक्त नहीं.

पैक: 50g

जीवेम शरदः शतम्

Dentosil
Dentosil
Torel Plus
Torel Plus
First Care
MORAL
Pivitol
Feva
CUTPAIN
Morvital
TRAXA
Minospas
Levofloxacin Tablets
LEVOMOR-750
Torel

MORAL GROUP OF COMPANIES

All Ways Together...

A WIDE RANGE OF

MORAL PHARMA PRODUCTS

जीवेम शरदः शतम्

Registered Office :

Moral Pharmaceuticals Pvt. Ltd.

Saxena House, First Floor, 36 Jawahar Nagar,
Goregaon West, Mumbai, Maharashtra - 400062

Command Office :

MORAL PHARMA PRODUCTS

Toll Free No- 1800-102-0087 | 1800-419-2444

Corp Office:- Royal Arcade 565-Ka-94/2 ,Sneh Nagar,
Alambagh, Lucknow(U.P)-226005

www.moralpharma.com